एक हक़ीक़त

कुछ गज़ले, कुछ नज़्में

ए. आर. साहिल



एक हक़ीक़त

(नज़्म, ग़ज़ल, निबन्ध व उक्तियाँ)

ए.आर. साहिल

हिन्दी साहित्य सदन

नई दिल्ली-110005

© : लेखकाधीन
संस्करण : 22 मार्च 2010
मूल्य : 150 रुपए
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी. डी. चैंबर्स, 10/54, देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग, नयी दिल्ली-110005
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com
दूरभाष : 23553624, 23551344
शब्द संयोजन : सारस्वत ग्राफिक्स, शाहदरा, दिल्ली-110032
मुद्रक : गोयल एन्टरप्राइजेज, शाहदरा, दिल्ली-110032

Saza-a-Muhabbat : Urdu Poems & Articles by A.R. Sahil

लेखकीय

मैं अल्लाह की कुदरत के सामने अपने आपको झुकाता हूँ जो कि सबसे बड़ा ताकतवाला और रहमवाला है, जिसने हम पर अपना करम किया है। मुझे इस लायक बनाया व इस हुनर से नवाजा है कि मैं अपने दिल की बातों को, अपने जज़्बातों को खूबसूरत मोतियों की तरह के लफ़्ज़ों में पिरोकर शेरो-शायरी, ग़ज़ल व नज़्म और वाक्य की शक्ल में लोगों के सामने बयाँ कर सकूँ। मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ व फरियाद करता हूँ कि या अल्लाह! मुझे सीधे रास्ते पर चला और इस काबिल बना कि मैं अपने मक़सद में कामयाब हो जाऊँ, लोग मेरी नज़्मों, ग़ज़लों को पसन्द करें और मैं लोगों का एक पसन्दीदा व चहेता शायर बन जाऊँ।

मैं आप सभी लोगों से भी एक दिली-दरख्वास्त व इल्तिजा करता हूँ कि मुझे अपनी दुआओं व आशीर्वाद से नवाजते रहें ताकि मैं एक अच्छा इन्सान बन सकूँ, एक अच्छा शायर बन सकूँ और अपने मकसद में कामयाब हो सकूँ।

—ए.आर. साहिल

ई-मेल : Sahil9286190067@gmail.com
वेबसाइट : www.arsahil.com

Dedicated to

My loving Parents and Sister

My loving Uncle Md. Zafeer Raza

My love Anjali

Mohsin Khan, Masoom Raza, Wasim Akhter,

Nasim Akhter, Jawed Akhter,

Zahur Aalam, Mahfooj Aalam,

Manish Pushker

and

All My loving friend.

क्रम

ग़ज़ल

नज़्म

निबन्ध व उक्तियाँ

ग़ज़ल

सज़ा-ए-मुहब्बत

इन्सान की भला औकात ही क्या जो किसी को कुछ दे सकेगा
देनेवाला तो बस इक ख़ुदा है जो कुछ भी देगा वही देगा।

अदालत-ए-मुहब्बत से कातिल भी वही है जो बना है मुन्सिब
मुहब्बत में सताए मजलूमों को भला वह क्या इंसाफ देगा।

इश्के-मिजाजी में सनम को सनम ही रहने दो ख़ुदा न बनाओ
वर्ना मेरी तरह तुम्हें भी तुम्हारा सनम काफिर बना देगा।

मुहब्बत के रास्ते व मंजिल को इतिहास के पन्नों में गौर से देखो
अन्जामे मुहब्बत कभी तुमको सफर-ए-मुहब्बत पे न जाने देगा।

सच है 'साहिल' हर दर्द व जख्म की दवा मुहब्बत है
तुम्हीं बताओ दर्द-ए-मुहब्बत की दवा कौन मसीहा देगा।

ख़ुदा से

कहते हैं लोग माँगो तो हर चीज मिल जाती है दुआ से
सब कहने की बातें हैं कुछ भी नहीं मिलता यहाँ दुआ से।

है तुम्हारे अन्दर छीनने की सलाहियत तो छीन लो ख़ुदा से
वर्ना दिल को दे दो तसल्ली इन्ना-लिल्ला-हे-मअस-साबेरिन कह के ख़ुदा से।

जज्बात से खाली हैं पत्थर और पत्थर के हैं सनम पत्थर का है ख़ुदा
रो-रो कर सर टकराना छोड़ दे उस पत्थर के खुदा से।

काहे का खुदा कहाँ का खुदा जब वश्ल-ए-यार भी तेरे वश में नहीं
एक महबूबा ही माँगी थी ऐसी कौन-सी खुदाई माँग ली मैंने खुदा से।

आँसुओं का, दुआओं का, दवाओं का कोई असर होता नहीं जख्म-ए-इश्क में
दर्दे-दिल की दवा आखिर क्या है 'साहिल' पूछूँगा एक रोज ख़ुदा से।

ख़ुदा से

कहते हैं लोग माँगो तो हर चीज मिल जाती है दुआ से
सब कहने की बातें हैं कुछ भी नहीं मिलता यहाँ दुआ से।

है तुम्हारे अन्दर छीनने की सलाहियत तो छीन लो ख़ुदा से
वर्ना दिल को दे दो तसल्ली इन्ना-लिल्ला-हे-मअस-साबेरिन कह के ख़ुदा से।

जज्बात से खाली हैं पत्थर और पत्थर के हैं सनम पत्थर का है ख़ुदा
रो-रो कर सर टकराना छोड़ दे उस पत्थर के ख़ुदा से।

काहे का ख़ुदा कहाँ का ख़ुदा जब वस्ल-ए-यार भी तेरे वश में नहीं
एक महबूबा ही माँगी थी ऐसी कौन-सी ख़ुदाई माँग ली मैंने ख़ुदा से।

आँसुओं का, दुआओं का, दवाओं का कोई असर होता नहीं जख़्म-ए-इश्क़ में
दर्दे-दिल की दवा आख़िर क्या है 'साहिल' पूछूँगा एक रोज ख़ुदा से।

यादें

हर इक बात, हर इक लम्हा, हर इक पल बन जाती हैं एक यादें
कभी नीम चढ़ा करेला, तो कभी शहद से भी मीठी बन जाती हैं यादें

महफिल में हो या तन्हाई में, हर पल याद आती हैं यादें
होंठों पे बन के हँसी, तो कभी बन के आँसू आँखों से बहती हैं यादें

खाली दिमाग तो शैतान का है, ऐसे में तो हर कोई आता है याद
महफिल में आकर तन्हा कर जाए जो, असल में वही होती हैं यादें

पैदाइश से मौत तक एक बहुत ही हसीन सफर है ये जिन्दगी
इस सफर में मिलने वाले सभी लोग दिल में बस जाते हैं बनकर यादें

इन्सान को हमेशा याद आते हैं सफर-ए-जिन्दगी में मिलने वाले दो लोग
करते हैं जिनसे नफरत व मुहब्बत, भला कब पीछा छोड़ती हैं उनकी यादें

यादों को हमेशा याद रखो, मगर यादों की दुनिया में जीना छोड़ दो 'साहिल'
वर्ना गुजरता हुआ हर पल रुलाएगा तुम्हें बनकर एक कसक भरी यादें

सिगरेट

माना कि ये सच है जिन्दगी के दिनों को कम करती है सिगरेट
मगर जिसको बाँटा न जाए वैसे गम को बाँटती है सिगरेट

देखना चाहते हो तो देख लो, किस तरह भुलाते हैं आपकी दास्ताने-वफा को
हर दास्तान-ए-जिन्दगी को धुएँ में उड़ाना सिखाती है सिगरेट

हँसी व आँसू और गम व खुशी तो जिन्दगी के दो पहलू हैं।
मायूसकुन जिन्दगी को भी मुस्कुराकर जीने का हुनर सिखाती है सिगरेट

दिल की तरह टूट कर बिखर गया दोस्ती व वफा का हर भ्रम
फिल्टर तक जल कर भी दोस्ती का भ्रम कायम रखती है सिगरेट

खुद को जला कर भी अपने दोस्तों का साथ कभी छोड़ती नहीं सिगरेट
जो किसी से बाँट न सको 'साहिल' वैसे गम को बाँटती है सिगरेट

कॉलेज और सिगरेट

कैंटीन से, ढाबे से, चाय के सिप से, सिगरेट के कश से
अपनी तो सुबह शुरू होती है सिगरेट के कश से

आओ कर लें थोड़ी पढ़ाई बहुत हो गई बंक क्लास से
दोस्तों ने करा दी अटेंडेंस शॉर्ट भगा के क्लास से

रखते हैं हमेशा हिसाब अपने Marks का Attendence का
Paper में हम तो लगवाते हैं Back खुद ही बहुत एहतराम से

C.P.I. का Campus Selection का tension होता है दूर सिगरेट से
Paper clear करने का Pressure करते हैं दूर, हम तो सिगरेट से

काश

तुम्हारी तरह काश, तुम्हारी यादें भी बेवफा हो जातीं
तुम तो भूल गए, काश मुझमें भी तुम्हें भुलाने की सलाहियात हो जाती

दस्तक दिये बगैर दिल पे, तुम्हारी कितनी यादें हैं आ जातीं
यादों की तरह, काश तुम भी बिन बुलाए मेरी जिन्दगी में आ जातीं

सिगरेट जल जाती है, रात गुजर जाती है, होती नहीं कोई गजल मुकम्मल
पल भर को सोचता हूँ तुम्हें, और अधूरी गजल मुकम्मल हो जाती

देख लो कभी, बिन तुम्हारे जिन्दगी मेरी कितनी वीरान जंगल बन गई है
पर यादें तुम्हारी आती हैं जब, वीरान जंगल भी है ताजमहल बन जाती

ताजमहल

मुहब्बत की कशिश पे यादों में बना है मकबरा-ए-ताजमहल
आशियाना भी नहीं होगा इतना खूबसूरत जितना ताजमहल

अमर-प्रेम कहानी तो कभी संगमरमर में एक मर्सिया है ताजमहल
दुनिया का अप्रतिम सुन्दर, अतुलनीय व एक सपना है ताजमहल

अरबी, तुर्की, हिन्दी व इस्लामी वास्तुकला का संगम है ताजमहल
हर मजहब की संस्कृति को समेट कर, भाईचारे का पैगाम है ताजमहल

बयाँ करता है कभी इंतहा-ए-इश्क, तो कभी पैसों से तोलता है मुहब्बत
गरीब की मुहब्बत का मजाक उड़ाता है, शाहजहां की मुहब्बत का ताजमहल

सारी दुनिया कहती है 'साहिल', मुहब्बत की इकलौती निशानी है ताजमहल
हजारों मजदूरों के हाथ कटवा दें जो, ऐसी खुदगर्जी की निशानी है ताजमहल।

मुहब्बत

राहे मुहब्बत का मुसाफिर बनने से मुझको हमेशा रोका गया
दिल, जान, जिन्दगी सब कुछ लुटाकर भी कुछ न मिलेगा, कहा गया।

मुहब्बत जैसी इक चीज को न जाने क्या-क्या कहा गया
कभी इक रोग बुरा तो कभी खुदा का दूसरा नाम कहा गया।

आशिकों की जुबाँ में सनम को न जाने क्या-क्या कहा गया
कभी खुदा तो कभी काफिर-ए-सनम कहा गया।

सफर-ए-मुहब्बत जो अहले मंजिल ही खत्म हो गई उसे
कितनी खूबसूरती से अपनी-अपनी किस्मत कहा गया।

सोचो तो 'साहिल' मुहब्बत भी एक अनबूझ पहेली है जिसे
कभी हर दर्द की दवा तो कभी दर्दे-बेदवा कहा गया।

शुक्रिया

शुक्रिया...शुक्रिया...तेरा बहुत-बहुत शुक्रिया
किस तरह अदा करूँ मैं तेरा ये शुक्रिया
एक ठुकराये हुए इन्सान को ये दिल जो आपने दिया
जो करता है खुद से नफरत उससे मुहब्बत करने का शुक्रिया
शुक्रिया...शुक्रिया...तेरा बहुत-बहुत शुक्रिया

जब से आपने अपनी नजरों में प्यार के काबिल समझा हमें
दिल में दी जगह और जिन्दगी का साहिल समझा हमें
समाज व मजहब की सहरदों को तोड़ते हुए अपना महबूब समझा हमें
दिल की हर धड़कन कहने लगी है शुक्रिया...शुक्रिया
शुक्रिया...शुक्रिया...तेरा बहुत-बहुत शुक्रिया

सोचता हूँ कर लूँ मंजूर तेरा ये फैसला पर डरता हूँ
अपने माजी से, किस्मत से और लड़की की फितरत से
पढ़ाकर मुझे वफा का सबक कहीं बन जाओ न तुम बेवफा
कह दो न कहीं वो तो था एक मजाक और आपने समझा जाने क्या
शुक्रिया...शुक्रिया...तेरा बहुत-बहुत शुक्रिया

आपकी मुहब्बत की करता हूँ कद्र व तहे दिल से शुक्रिया
पर मुहब्बत के जख्म फिर सहने की मुझमें हिम्मत नहीं
मुश्किल से समेटा है खुद को अब फिर बिखरने की हिम्मत नहीं
अब जो मुहब्बत को खोया 'साहिल' तो कभी सँवर न पाऊँगा
आपने समझा प्यार के काबिल हमें शुक्रिया बहुत-बहुत शुक्रिया
शुक्रिया...शुक्रिया...तेरा बहुत-बहुत शुक्रिया

साहिल

साहिल का वजूद तो हमेशा सागर के पास ही पाया जाता है
फिर भी उसका मुकद्दर हमेशा तिश्नगी ही बनता है क्यों?

जाने कितनी दफा साहिल को गले लगाते हैं दरिया के पानी
साहिल व पानी की जिन्दगी-ए-मुहब्बत दो पल का ही होता है क्यों?

यूँ तो हर पल, हर वक्त पानी ही पानी है साहिल के पास
फिर भी उम्र भर प्यासा ही रहता है साहिल जाने क्यों?

गले लगाकर तन्हा छोड़ जाना फितरत है दरिया के पानी का
फिर भी दर्दे-बेवफाई को भूल, हर बार साहिल पानी को गले लगाता है

पानी की शक्ल में नजर आता है साहिल की आँखों में आँसू का जो कतरा
दिल-ए-साहिल का खून है या दरिया-ए-पानी का वजूद, नहीं पता चलता क्यों

———

नज़्म

शहर-ए-हिन्दुस्तान और मुसलमान

शहर-ए-हिन्दुस्तान
अपने-आप में एक अजीबोगरीब शहर है
हिन्दू-मुस्लिम
अगर यहाँ भाई-भाई बनकर रहते हैं
वक्त पड़ने पर एक-दूसरे के लिए
अपनी जान की कुर्बानी दे देते हैं
तो अपने मजहब की खातिर
अपने हमवतन भाइयों के खून के प्यासे बन जाते हैं।

कभी इस शहर-ए-हिन्दुस्तान में
प्यार-मुहब्बत के तेल से दीवाली का दिया जलता है
और सारा शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान'
प्यार-मुहब्बत के रौशनी से रौशन हो जाता है
तो कभी
साम्प्रदायिक दंगा व मजहबी नफरतों की आग में
पूरा का पूरा 'शहर-ए-हिन्दुस्तान' जल उठता है।
कभी इस 'शहर-ए-हिन्दुस्तान' में
प्यार-मुहब्बत व आपसी भाईचारे के रंगों से
होली का त्योहार मनाया जाता है
तो कभी
हिन्दू-मुस्लिम
सभी, नफरतों की आग में जलकर
शहर-ए-हिन्दुस्तान की जमीन को
अपने ही हमवतन भाइयों के खून से रंग देते हैं।

कितना अजीबोगरीब शहर है
हमारा ये शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान'।

सारे जहाँ से अच्छा शहर
हमारा प्यारा शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान'
यहाँ अगर
बेहूदगी, बेहयाई, बेशर्मी और उरयानियत
अपनी तमाम हदों को पार करके
सड़कों पे घूमती नजर आती है
तो यहाँ की सड़कों पर
बाहिजाब मुस्लिम ख्वातिनें भी
अपने जिस्मों को चादरों से ढके हुए जा बजा दिखाई पड़ते हैं।

यहाँ अगर
लातादाद शराबखाने, चकलाखाने व बदकारी के अड्डे हैं
तो...
इन बदकारी के अड्डों से
निकलने वाले अजाबों से लड़ने के लिए
इसी शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान' में
हजारहाँ मस्जिदें, खानकाहें, और इमामबाड़े भी हैं।

यह वही शहर है जहाँ...
मुसलमानों व इस्लाम का दर्द रखने वाले अफराद भी हजारों हैं
तो...
यहाँ मुसलमान व इस्लाम के वो बदतरीन दुश्मन भी रहते हैं
जिन्होंने...
बाबरी मस्जिद की शहादत को...

काबिले फख्र कारनामा करार दिया।

गुजरात में मुसलमानों का ऐसा कत्ल-ए-आम किया
कि क्या कहूँ...?
इन्सान तो इन्सान
शैतानों व हैवानों ने भी
शर्म से अपना सर खम कर लिया और आँखें बन्द कर लीं।

ये वही शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान' है
जिसे सारी दुनिया Secular Country के नाम से जानती है
और...
जहाँ रहने वाले हर लोग
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई
सभी जानते हैं, समझते व मानते भी हैं।

आतंकवाद का कोई मजहब नहीं कोई धर्म नहीं होता
फिर भी जाने क्यों
शहर-ए-हिन्दुतान को ये दस्तूर है
हर आतंकवाद व दहशतगर्द का रिश्ता
इस्लाम, जिहाद व मुसलमान से जोड़ देते हैं।

वे भूल जाते हैं
ये वही शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान' है
जहाँ के रहने वाले मुसलमानों ने
उन दहशतगर्दों व आतंकवादियों को
अपने पाक कब्रिस्तान में दफनाने से इंकार कर दिया
जिन्होंने...

26/11 को मुम्बई पर हमला किया था।

क्या कहूँ...
'शहर-ए-हिन्दुस्तान' व यहाँ के रहने वाले लोगों के बारे में
कैसा है ये शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान' और...
कैसे हैं यहाँ के लोग
मुझे तो कुछ समझ में नहीं आता
आप ही बताएँ....आपसे ही पूछता हूँ
कैसा है शहर 'शहर-ए-हिन्दुस्तान' और...
कैसे हैं यहाँ के लोग?

———

कहीं आग तो कहीं धुआँ

मैं जब भी
अपने शहर, अपने देश, अपने वतन
अपने प्यारे वतन हिन्दुस्तान को देखता हूँ
तो मेरे जहन में एक ही सवाल आता है
जो मेरे दिल पे हथौड़े की तरह बरसता है
और मेरा दिल छलनी-छलनी हो जाता है

मैं अक्सर सोचा करता हूँ
हमारे शहर, हमारे देश, हमारे वतन को
हाँ, हमारे प्यारे वतन हिन्दुस्तान को
आखिर हुआ क्या है

पूरब से लेकर पश्चिम तक
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक
जहाँ भी देखो
हर तरफ हर जगह
कहीं आग तो कहीं धुआँ है
कहीं गोली का शोर तो कहीं बमों का धमाका है
मर चुकी है इन्सानियत जिन्दा सिर्फ हैवानियत का बोलबाला है
और हमारे हिन्दुस्तान की जमीन
मासूम बेगुनाह इन्सानों के खून से रंग चुकी है
हर किसी की निगाहों में एक डर है
हर कोई सहमा-सहमा सा है
जाने कब, किधर से गोली की बौछार हो जाए
या कब बमों के धमाके से आसमान गूँज उठे

और एक बार फिर वही मंजर दिखने लगे
जहाँ भी देखो
हर जगह हर तरफ
कहीं आग तो कहीं धुआँ है।

आखिर हमारे हिन्दुस्तान को हुआ क्या है
क्यों जल उठा है हमारा हिन्दुस्तान
नफरतों की आग में
धर्म, मजहब व साम्प्रदायिकता की आग में
अहं व सम्प्रभुता की आग में
भाषा व क्षेत्रीयता की अलगाववादी आग में
जातिवाद व भाईवाद की आग में
क्यों, आखिर क्यों जल रहा है हमारा हिन्दुस्तान
ऐसे हिन्दुस्तान का ख्वाब तो नहीं देखा था
हमारे पूर्वजों ने
वीर क्रान्तिकारियों व स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानियों ने
जिन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर
हमें गुलामी की जंजीरों से आजाद कराया
अपने प्यारे वतन हिन्दुस्तान से आजाद कराया
नहीं ये हरगिज नहीं हो सकता
जहाँ खून की होली खेली जाती हो
इन्सानी लाशों से होली का दहन होता हो
खून के आँसुओं से दीवाली का दिया जलता हो
जहाँ हैवानियत व हिंसा का नंगा नाच होता हो
वो जगह, वो शहर, वो देश
शान्ति व अहिंसा के पुजारी
हमारे बापू महात्मा गांधी का देश नहीं हो सकता

हमारा प्यारा वतन हिन्दुस्तान ऐसा नहीं हो सकता
तो फिर क्यों
हर कोई ये सब बर्दाश्त कर रहा है
कोई कुछ बोलता क्यों नहीं
क्यों हर कोई चुप है, डरा है, सहमा-सहमा सा है
आखिर हमारे हिन्दुस्तान को हुआ क्या है
कहीं आग तो कहीं धुआँ-धुआँ है

माँ

मैंने पूछा एक रोज खुदा से
दीन व दुनिया दोनों जहाँ के मालिक उस खुदा से
ऐ खुदा, तुझको खुदाई की कसम
मुझको बता 'माँ' क्या है?
मेरे इस बचकाने से सवाल पे
पहले वह जी भर कर हँसा
फिर कुछ देर चुप रहा
और कहा
'माँ' मेरी तरफ से तुम लोगों को दिया गया...
एक कीमती, नायाब व बेमिसाल तोहफा है
एक ऐसा वजूद जो सिर्फ ममता व एतबार से लबरेज है
एक ऐसी हस्ती जो न तो वली है और न ही कोई पैगम्बर
फिर भी उसके दिल पे आगाही के वाकयात उतरते हैं
माँ एक ऐसा कुदरत का नमूना है...
जिसके माथे पे ममता भरी चमक...व आँखों में प्यार
हाथों में दुलार...व अल्फाज में हिम्मत
दिल में मुहब्बत...व कदमों तले जन्नत है
माँ का आँचल एक ऐसा आसमान है जहाँ सिर्फ और सिर्फ
अदब...तहजीब...व एतमाद...
जज्बात...प्यार-मुहब्बत...व इल्म नाम के तारे ही जगमगाते हैं

मैंने पूछा एक रोज बाग से
ऐ बाग, तुझको कलियों की कसम
मुझको बता 'माँ' क्या है?

बाग ने कहा हर कली की कसम
'माँ' एक शजर (पेड़) का नाम है
जिस पर हमेशा...
दुलार, प्यार, चाहत व मुहब्बत नाम की बहारें आती हैं
खिजा नाम की शय तो इसके आस-पास भी नहीं फटकती
इस माँ नाम की शजर की ठंडी छाँव में...
इन्सान अपनी जिन्दगी की सारी थकान भूल जाता है।

मैंने पूछा एक रोज सागर से
ऐ सागर, तुझको लहरों की कसम
मुझको बता 'माँ' क्या है?
सागर ने कहा, हर लहर की कसम
माँ एक ऐसा सीप है जो...
अपनी औलाद के सारे ऐब व राज
अपने सीने में छुपा लेती है
और खुदा से...
हमेशा अपनी औलादों की खुशी की दुआ माँगती है।

मैंने पूछा एक रोज शायरों से
ऐ शायर, तुझको शायरी की कसम
मुझको बता 'माँ' क्या है?
शायर ने कहा, शायरी की कसम
माँ के बारे में क्या कहूँ
मैं तो बस इतना की कहूँगा
माँ तो...
मीर की गजल भी है...खैय्याम की रूबाई भी है...
और माँ एक मरसिया भी है।

सबसे अन्त में...

मैंने पूछा एक रोज अपने ही दिल से
ऐ दिल तुझको हर धड़कन की कसम
मुझको बता 'माँ' क्या है?
दिल ने कहा, सीने में धड़कने वाली हर धड़कन की कसम
माँ एक छोटा-सा लफ्ज है...
लेकिन इसके कहने से दिल को सकून मिलता है...
यूँ महसूस होता है कि जैसे...
कड़ी धूप में खड़ा इन्सान छाँव में आ गया हो
माँ एक अब्र-ए-रहमत और छाँव की तरह है
जिसके नीचे बैठकर इन्सान ठंडक महसूस करता है
माँ एक ऐसी हस्ती है
जिसके कहने से दुनिया की तमाम खुशी मिल जाती है।

औरत

औरत क्या है?
सच कहूँ तो...
माँ के रूप में बाइसे जन्नत
बेटी के रूप में रहमत
बहन के रूप में इज्जत
और...
बीवी के रूप में सकून का सबब।
एक ऐसा आसमानी तोहफा
जो बावफा भी है...और बेवफा भी...
नर्मदिल भी है...और संगदिल भी
नेक हो तो
घर में सकून रहता है...वर्ना कोहराम।
औरत अपने आमाल से...
घर को जन्नत भी बना सकती है...
और दोजख भी।
एक ऐसी किताब
जिसका हर पेज एक नये रंग का होता है।
औरत चारदीवारी की जीनत है
न कि बाजार की।
औरत के दिल का फैसला
एक ऐसी चट्टान है
जिसे...
समुद्र की मौजें भी नहीं तोड़ सकतीं।

———

ज़िन्दगी

क्या तुमने कभी सोचा है
जिन्दगी क्या है?
गर नहीं सोचा तो अब सोचो
जिन्दगी क्या है
सच कहो तो ऐसा लगता है
ज़िन्दगी भी बस एक डायरी की तरह है
जिसके हर वर्क पर, हर सफे पर
दिन, तारीख, महीने व साल लिखे हैं
सफा एक से आखीर तक
ज़िन्दगी उस पर
अनगिनत तहरीरें अनगिनत कहानियाँ लिखती है
ये अनगिनत तहरीरें
कभी मीर की गजल होती है तो कभी खय्याम की रूबाई
और कभी-कभी एक मरसिया भी
ये कहानी, गजल, रूबाई व मरसिया
उस वक्त के मिजाजे-जिन्दगी पर Depend करती है
जब ये खुश होती है तो...
धनुष के सातों रंग डायरी में सजाती है
जब ये नाखुश व उदास होती है तो...
मातमी स्याह रंग से सफों को काला कर देती है
गर हम शुरू से आखिर तक
डायरी रूपी जिन्दगी को
सफ़ा-ब-सफ़ा पढ़ते जाएँगे तो...
पता चलेगा
तारीख के साथ-साथ

तहरीरों में भी तजुर्बों के साथ-साथ
जिम्मेदाराना व पुख्ता सोच दिखाई देता है
लेकिन अफसोस...
जैसे ही
हम उन तहरीरों से फायदा उठाना चाहते हैं
तो पता चलता है 'साहिल'
डायरी रूपी ज़िन्दगी के सफ़े ही खत्म हो गए हैं
और हम
मौत की आगोश में
हमेशा-हमेशा के लिए सो जाते हैं।

मुसलमान और मोमिन

कौन है मुसलमान और कौन है मोमिन?
क्या फर्क है एक मुसलमान और मोमिन में?
एक ऐसा सवाल
जिसने मुझे काफी परेशान किया
मैंने हर किसी से पूछा
मगर अफसोस...
किसी के जवाब ने मुझे मुतमइन नहीं किया
ऐसा लगने लगा
शायद मेरा सवाल ही गलत है,
एक बकवास है
लेकिन
फिर एक दिन ख्याल आया
दिल में उठा है सवाल तो...
चलो दिल से ही पूछता हूँ
शायद...
मुझे जवाब मिल जाए।
मैंने कहा दिल से...
ऐ दिल
क्या तू बता सकता है
मुसलमान कौन है और कौन है मोमिन?
क्या फर्क है एक मुसलमान और मोमिन में?
दिल ने कहा
जरा गौर से सुनो
मुसलमान और मोमिन में...
फर्क बस 'को' और 'की' का है

मैंने कहा,
कुछ समझा नहीं।
सुनकर मेरी बात
दिल ने कहा,
मुसलमान वो है जो खुदा, रसूल व कुरान को मानता है
और
सच्चा मुसलमान या मोमिन
खुदा का वो बन्दा है 'साहिल' जो...
खुदा, रसूल व कुरान के साथ-साथ...
खुदा की भी मानता है।

इंसान, जानवर और फरिश्ते

खुदा ने
इन्सान भी बनाया, जानवर भी और फरिश्ते भी
पर
खुदा की कुदरत देखो
जानवरों को ख्वाहिश दी लेकिन अक्ल न दी
फरिश्तों को अक्ल दी और ख्वाहिशों से महरूम रखा
और इन्सान...
इन्सान को खुदा ने
अक्ल भी दी, ख्वाहिश भी दी
और कहा,
तुम चाहो तो जानवरों से भी बदतर बन सकते हो
गर चाहो तो...
फरिश्तों से भी बेहतर व अफजल
अब तुम सोचो...
तुम्हें क्या बनना है?

सुनकर खुदा की बात
इन्सानों ने कहा,
या मौला
भला ये कैसे मुमकिन है?
सुनकर इन्सानों का सवाल
खुदा ने कहा,
Its very simple
गर तुम अपनी ख्वाहिशों से
अक्ल को दबा लो तो...

तुम जानवरों से भी बदतर बन जाओगे
और गर तुम
अपनी अक्ल से अपनी ख्वाहिशों पे काबू पा लो...
अपनी ख्वाहिशों को दबा लो तो...
तुम फरिश्ते से भी बेहतर बन जाओगे।
अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है
तुम्हें सोचना है
कि...
तुम्हें जानवरों से भी बदतर बनना है
या फिर...
फरिश्तों से भी बेहतर व अफजल
मैंने तुम्हें अक्ल व ख्वाहिश दोनों से नवाजा है
और मेरा वादा है 'साहिल'
तुम अपने आमाल से
जैसा चाहोगे वैसा ही बनोगे।

शिकवा

ऐ मेरे दिल-ए-नादाँ
तू समझता क्यों नहीं
मेरा कहा मानता क्यों नहीं
मैंने तुझसे कितनी बार कहा
शिकवा कभी किसी से न करो
न खुदा से...न तकदीर से...न बन्दों से...
न ही समाज से और न ही खुद से
मैं तो कहता हूँ
ऐ मेरे दिल-ए-नादाँ
शिकवा लफ्ज ही अपनी जिन्दगी से निकाल दे
मेरा कहा मान
कभी भी किसी से शिकवा न कर
जानता है क्यों
क्योंकि
शिकवा...
गर खुदा से करोगे...
गुनाहगार कहलाओगे
गर तकदीर से करोगे...
वो सुन नहीं सकती, उसके कान नहीं होते
गर बन्दों से करोगे...
मायूसी के सिवा कुछ भी हाथ न आएगा
समाज से करोगे...
कोई फायदा नहीं, वो तो भैंस है
भैंस के आगे बीन बजाने से क्या फायदा
और शिकवा

अपने आपसे भी न करो...
नहीं तो लोग पागल कहेंगे
इसलिए
ऐ मेरे दिल-ए-नादाँ
मेरा कहा मान, मेरा यकीन कर
बहुत खुश रहेगा तू
बस शिकवा करना छोड़ दे
हाँ मेरे दिल-ए-नादाँ
तू शिकवा करना छोड़ दे
छोड़ दे...छोड़ दे...शिकवा करना छोड़ दे।

ख्वाहिश

ऐ दुनिया वालो
क्या तुमने कभी सोचा है
ख्वाहिश क्या है?
किस चिड़िया का नाम है ख्वाहिश
क्यों कहते हैं हमसे, हमारे माँ-बाप व बुजुर्ग—
बेटा,
ख्वाहिशों के पीछे मत भागो...
ख्वाहिशों को अपना गुलाम बनाओ
न कि...
ख्वाहिशों के तुम गुलाम बनो।
क्या तुमने कभी सोचा है
क्यों कहा शायर मिर्जा गालिब ने,
"हजारों ख्वाहिश ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले अरमान लेकिन फिर भी कम निकले"
और क्यों कहा शायर कैफी आजमी ने,
"इन्सानों की ख्वाहिश की कोई इन्तहा नहीं
दो गज जमीन भी चाहिए दो गज कफन के बाद"
बताओ दुनिया वालो
क्या तुमने कभी सोचा है
ख्वाहिश क्या है?
किस चिड़िया का नाम है ख्वाहिश?
गर नहीं सोचा तो...
अब सोचो
गर सोचे बिना जानना चाहते हो...
ख्वाहिश क्या है?

तो...
सुनो...गौर से सुनो
ख्वाहिश नाम है उस भँवर का...
जिसमें फँसकर इन्सान अपना आपा भूल जाता है।
ख्वाहिश नाम है उस आग का...
जो इन्सान को झुलसाने की पूरी सलाहियत रखती है।
ख्वाहिश नाम है उस समुद्र का...
जिसके साहिल तक पहुँचना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।
ख्वाहिश नाम है उस जाम का...
जिसे जितना पिया जाए प्यास उतनी ही बढ़ती है।
ख्वाहिश नाम है उस सैलाब का...
जो इन्सान को इन्सान से दूर ले जाती है।
और
ख्वाहिश नाम है उस काली रात का 'साहिल'
जो इन्सानी ज़िन्दगी में कभी सवेरा नहीं करती।

चार बातें

रात का समय था और तन्हाई का आलम
चारों तरफ सन्नाटा ही सन्नाटा था
मैं यूँ ही उदास, किन्हीं ख्यालों में गुम...
एक पेड़ के नीचे बैठा
सिगरेट का धुआँ उड़ा रहा था
कि इतने में...
मेरे जहन में एक ख्याल आया
काश...
कितना अच्छा होता गर...
इन्सानी जिन्दगी में चार चीजें होतीं और...
इन्सानी जिन्दगी में चार चीजें नहीं होतीं।
ख्याल का आना था कि दिल से आवाज आई
कि...
वो चार चीजें क्या होतीं और क्या नहीं होतीं
मैंने कहा
काश...
जिन्दगी होती...पर मौत न होती
जन्नत होती...पर दोजख न होती
अमीरी होती...पर गरीबी न होती
और...
तन्दुरुस्ती होती...पर बीमारी न होती।
सुनकर मेरी बात
दिल को हँसी आ गई
और कहा...
यूँ तो तुम्हारी उम्र 19 साल है पर...

तुम अभी तक बच्चे ही हो...
और तुम्हारा ख्याल बचकाना व मासूमियत भरा
जरा तुम ही सोचो और बताओ
गर जिन्दगी होती, मौत न होती तो...
खुदा का दीदार कौन करता?
गर जन्नत होती, दोजख न होती तो...
खुदा के अजाब से कौन डरता?
गर अमीरी होती, गरीबी न होती तो...
खुदा का शुक्र कौन अदा करता?
और...
गर तन्दुरुस्ती होती, बीमारी न होती तो...
खुदा को याद कौन करता?
सुनकर दिल का जवाब व सवाल
मुझे अपने नादान से ख्याल पर शर्मिन्दगी होने लगी
और खुदा से कहा
या अल्लाह
मुझे माफ कर दे
बेशक मेरे परवर्दिगार
तेरे हर काम में...
कोई-न-कोई हिकमत छुपी है।

सबसे घटिया मजाक

इस दुनिया का
सबसे घटिया मजाक
भला क्या हो सकता है
शायद
जब आपको या आपकी वजह से किसी को शर्मिन्दा होना पड़े...
जब कोई दिल से दुख लेकर आपसे रुखसत हो...
जब किसी महान चीज को छोटा बना दिया जाए...
जब किसी कमजोरी का कारण बने...
जब किसी चीज को मजेदार बनाने के लिए
बेअदबी की जरूरत पड़े...
जब एक बच्चे को रुला दिया जाए...
जब हर कोई आपकी हँसी में शामिल न हो सके...
तब...
हाँ...तब वह
I think...
तब वह
इस दुनिया का...
सबसे घटिया मजाक ही कहलाएगा।

———

नाफरमानी

नाफरमानी तो कभी करनी ही नहीं चाहिए
चाहे वो खुदा के साथ हो या हो बन्दे के साथ
I think
खुदा के साथ चाहो तो...
नाफरमानी कभी-कभी कर सकते हो
पर...
बन्दों के साथ नाफरमानी
कभी भी किसी भी कीमत पर न करो
जानते हो क्यों?
क्योंकि...
खुदा तो हर वक्त तुम्हारे साथ है
तुम जब चाहो, जिस वक्त चाहो
खुदा से माफी माँग सकते हो...
अपनी गलती पर नादिम हो सकते हो...
अपने गुनाहों से तौबा कर सकते हो
पर...
गर तुम कभी बन्दों के मुताल्लिक...
बुरा सोचोगे या बुरा करोगे
तो पता नहीं...
तुम्हें इतनी भी मोहलत मिलेगी या नहीं कि...
तुम उससे माफी माँग सको
और उससे कह सको
I am so sorry
Please मुझे माफ कर दो।

सब्र

सब्र...
सब्र करना कितना मुश्किल होता
फिर भी...
हम इन्सानों को सब्र करना ही पड़ता है
चाहे इसमें हमारी जान ही क्यों न चली जाए
वाकई...
सब्र करना बहुत ही मुश्किल होता है
ये हकीकत...ये राज अब जा के समझ में आया है
कि...
सब्र करना कितना मुश्किल है
खासकर दो चीजों पर
सब्र करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा लगता है
एक वह
जो आपको नापसन्द हो और...
उसे आपकी जिन्दगी में शामिल कर दिया जाए
दूसरा वह
जो आपको बहुत ही पसन्द हो, बहुत ही अजीज हो...
उसे आपसे छीन लिया जाए
तो...
कितना मुश्किल होता है सब्र करना
मुझे तो ऐसा लगता है 'साहिल'
या यूँ कहो
इन दो चीजों पर सब्र करना
मेरे लिए मुश्किल ही नहीं नामुमकिन-सा है।

क्यों

मुझे कुछ सवालों के जवाब चाहिए
कोई है जो मुझे मेरे सवालों का जवाब दे दे
एक ऐसा सवाल
जो मुझे हमेशा बेचैन करता है
आखिर क्या वजह है
हम मुसलमान इतने बदहाल क्यों हैं
क्यों हमारी कोई दुआ कबूल नहीं होती
क्यों हमारी दुआएँ बेअसर हो रही हैं
आखिर क्या बात है
हम नमाज पढ़ते हैं पर...
हमारी जिन्दगी नहीं सुधरती
हमारे अखलाक बुलन्द व पाकीजा नहीं होते
हमारी दुआओं में असर नहीं होता
क्यों...
आखिर क्यों...
हम मुसलमान आज उसी मजहब-ए-इस्लाम को मानते हैं
जिसका बोलबाला सारी दुनिया पर था
जिसने करीब 600 साल तक सारी दुनिया पर हकूमत की
फिर क्यों...
हाँ क्यों...
आज के मुसलमान इतने बदहाल हैं
कोहेतूर तो कल भी था और आज भी है
फिर क्यों...
खुदा से बात करने के लिए
आज कोई मूसा जैसा मुसलमान नहीं है

करबला का मैदान तो आज भी है
फिर क्यों...
यजीद जैसे लोगों से लड़ने के लिए
आज कोई हसन व हुसैन पैदा नहीं होता
आखिर क्या वजह है
क्यों हम मुसलमान आज इतने बदहाल हैं
क्या आपने कभी सोचा है
गर नहीं तो सोचो...
हम मुसलमान क्यों इतने बदहाल हैं
शायद...
आज हम मुसलमान सिर्फ और सिर्फ
खुदा को मानते हैं, रसूल व कुरान को मानते हैं
लेकिन
खुदा के साथ-साथ खुदा की नहीं मानते
रसूल के साथ-साथ...
रसूल के बताए गए नक्शे-कदम पे नहीं चलते
कुरान के साथ-साथ...
कुरान में दिए गए उपदेशों को नहीं मानते
उन उपदेशों को अपनी जिन्दगी में शामिल नहीं करते
शायद यही वजह है 'साहिल'
कि...
हम मुसलमान इतने बदहाल व परेशान हैं।

माँ

माँ...ओ मेरी माँ...
मेरी खुशी...मेरी हँसी...मेरी आरजू...
मेरी दुनिया...मेरी हिम्मत...मेरी जन्नत...
मेरी जिन्दगी...
हाँ मेरी हर खुशी...
मेरी माँ...ओ मेरी माँ...
बस तू ही तू
हाँ मेरी माँ
तू ही बता...
मैं कैसे बयाँ करूँ?
माँ की खूबसूरती को...ममता को...
माँ के रहम-दिल व...माँ की अजमत को...
मैं कैसे बयाँ करूँ माँ...?
सच तो ये है
दुनिया की किसी भी जुबाँ में
ऐसा कोई लफ्ज ही नहीं...ऐसे कोई अल्फाज ही नहीं
जो माँ जैसी अजीम हस्ती को Define कर सके
यही सच है मेरी माँ
मैं चाहकर भी
तेरी अजमत...तेरी खूबसूरती को...
तेरी ममता...और तेरे रहम-दिल को...
मैं अपने लफ्जों में बयाँ नहीं कर सकता।
अगर मैं तमाम उम्र भी
काँटों पर चलूँ या अँगारों में जलूँ
तो भी मेरी माँ

हाँ तो भी...माँ...
मैं तेरे एक भी एहसान का बदला नहीं चुका सकता
तूने मुझे जन्नत जैसे इस जहाँ में पैदा किया...
जब मैंने अपनी आँखें खोलीं...
तो क्या बताऊँ...?
तेरी ममता और खुलूस भरे आगोश में
खुद को सदा महफूज पाया
और...
एक आँचल को अपने सर पे सदा आसमाँ की तरह पाया
जिसमें न जाने कितने सितारे जगमगा रहे थे
अदब...तहजीब....एतमाद व जज्बात
प्यार...मुहब्बत...व इल्म नाम के बेशुमार तारों को
हाँ माँ...
इन सारे बेशुमार तारों को बेहतरीन चमक के साथ...
हमेशा अपने सर पे जगमगाते हुए पाया
और जब भी मुझे....
तेरी खुलूस भरी गोद में नींद आई
तो खुदा कसम
गुलशन में महकने वाली गुलों को...
सागर में लहराने वाली लहरों को...
हरी-हरी पत्तियों पे चमकने वाली शबनम की बूँदों को
दुनिया की खुशगवार रंगीन वादियों को...
हाँ मेरी माँ...
इन सारी चीजों को
मैंने अपने ख्वाबों में पाया
हाँ मेरी माँ...
मुझे माफ कर दे...

मैं चाहकर भी
न तो तेरी खूबसूरती बयाँ कर सकता हूँ
और न ही तेरे किसी एहसान का बदला चुका सकता हूँ
हाँ मेरी माँ...
तू वाकई खुदा की एक बेमिसाल कुदरत है
तू एक ऐसा शजर है
जिस पर कभी भी खिजाओं का मौसम नहीं आता
ममता नाम के साये से लबरेज
माँ जैसी शजर पे
हमेशा-हमेशा....
दुलार, प्यार, चाहत व मुहब्बत नाम की बहारें आती हैं
मैं कैसे तेरी खूबसूरती को बयाँ करूँ माँ
मुझे समझ में नहीं आता...?
खुदा-करीम के दिए हुए बेशुमार तोहफों में
सबसे अफजल,
सबसे अनमोल व
सबसे पाकीजा तोहफा
बस एक तू ही है माँ ओ मेरी माँ
हाँ माँ...
तेरा पूरा का पूरा वजूद
सर से लेकर पाँव तक
खुदा की एक बेमिसाल कुदरत है
तेरे माथे पे ममता भरी चमक...व आँखों में प्यार
तेरे हाथों में दुलार...व अलफाज में हिम्मत
तेरे दिल में मुहब्बत...व कदमों में जन्नत है माँ
मैं कैसे तेरी खूबसूरती को बयाँ करूँ माँ
मुझे कुछ समझ में नहीं आता।

मुझे माफ कर दे माँ...
मैं चाहकर भी
न तो तेरी खूबसूरती बयाँ कर सकता हूँ...
और न ही तेरे किसी एहसान का बदला चुका सकता हूँ
हाँ मेरी माँ...
मेरी प्यारी माँ
यही सच है
यही हकीकत है।

दिल

दिल क्या है?
जज्बात का ठिकाना...
या मुहब्बत का घर
तमन्नाओं का डेरा...
या आरजुओं का चमन
हसरतों का मजार...
या तूफान-ए-नफरत का मरकज
क्या है ये दिल?
इस दिल में तो हर चीज का ठिकाना है
नेकी, बदी, मुहब्बत और नफरत
हर चीज का बसेरा है दिल
आस और पास
कभी दिल नेकी है तो...
कभी ये गुनाह का रूप
कभी इससे मुहब्बत के चश्मे उबलते हैं तो
कभी नफरतों का लावा
कभी उम्मीदों के कमल खिलते हैं तो
कभी हसरतों के जर्द पत्ते झरते हैं
आखिर क्या है ये दिल
बहुत सोचने-समझने के बाद
ऐसा लगता है
ये दिल, हाँ ये दिल
सच में
दर्द भी है और राग भी।

औरत, लड़की और मजहब-ए-इस्लाम

आज के सभी लोग
चाहे वो किसी भी मजहब व धर्म के मानने वाले हों
या फिर किसी भी देश के रहने वाले हो
चाहे वे किसी भी culture को follow करते हों
वो culture,
Westurn culture हो या फिर Eastern culture
हर किसी की जुबाँ पे
बस एक ही फसाना रहता है
मजहब-ए-इस्लाम में
लड़कियाँ अपने-आपको किसी अजाब से कम नहीं समझतीं
जैसे लड़की होना उसके लिए किसी गुनाह से कम न हो
हर बाप अपने बेटी को एक बोझ समझता है
और शौहर अपनी बीवी को अपने नस्ल बढ़ाने वाली एक मशीन
मैं तंग आ गया हूँ लोगों के इस फसाने से
हँसी आती है लोगों की इस घटिया सोच पे
मैं उन लोगों से कहना चाहता हूँ
अरे तुम क्या जानो मजहब-ए-इस्लाम को
इस मजहब ने
हाँ मजहब-ए-इस्लाम ने
औरतों और लड़कियों को इतनी इज्जत दी है...
बुलन्दियों की ऐसी आला मुकाम अता की है...
उसकी हैसियत और औकात इतनी ज्यादा है...
कि...
क्या बताऊँ...
तुम गैर-मुस्लिम सोच भी नहीं सकते

मजहब-ए-इस्लाम में
हमारे परवर्दिगार ने
लड़कियों को उसके हर रूप में हर किरदार में
हाँ
हर रूप में हर किरदार में...
लड़कियों को आला से आला मुकाम व इज्जत बख़्शी है
लड़कियों को तुम
चाहे जिस रूप में जिस किरदार में देखो
लड़कियों की हैसियत व बुलन्दियों को छू भी नहीं पाओगे
अल्ला ताला ने उसे
बेटी के रूप व किरदार में रहमत...
बहन के रूप व किरदार में इज्जत...
बीवी के रूप व किरदार में सकून का सबब बनाया है
और...
माँ के कहने ही क्या
माँ के रूप में लड़कियों को इतना बुलन्द मुकाम दिया गया है
क्या कहूँ
माँ के रूप में व किरदार में...
लड़कियों के कदमों तले जन्नत डाल दी गई है
और हर सच्चा मुसलमान
लड़कियों के बारे में यही सोचता है
कि...
लड़कियाँ तो रिज्क की तरह होती हैं
अपनी हो तो हमेशा...
खुशी और शुक्र की निगाह डालो
कभी लफ्जों से न कहो
निगाहों और दिल से उनकी सलामती चाहो

दूसरों की हो तो हमेशा...
अपनी निगाहें झुका लो
बात करो तो
किसी बुरे ख्याल से अपने दिल व निगाहों को गन्दा न करो
तुम्हारा होना उन्हें
अपने महफूज होने व हिफाजत का एहसास दिलाए
ताकि...
सामने वाले को अपनी इज्जत महसूस हो
न कि बेइज्जती का एहसास
ये हैसियत रखती हैं लड़कियाँ
हमारे मजहब-ए-इस्लाम में
और...
सच्चे मुसलमान के दिल व निगाहों में।

इंसान की हकीकत

इन्सान क्या है और इसकी हकीकत क्या है?
एक ऐसा सवाल
जिसे हर कोई सदियों से
जानना चाह रहा है समझना चाह रहा है
दुनिया के सभी लोग
चाहे वो समाजशास्त्री हो, दार्शनिक हो या फिर वैज्ञानिक हो
हर कोई इस उलझे सवाल को सुलझाना चाह रहा है
और
हर किसी ने अपने-अपने तरीके से सुलझाना चाहा
लेकिन अफसोस
किसी ने आज तक इसे नहीं सुलझाया
और
इस उलझे सवाल में खुद उलझकर रह गया
आखिर इन्सान क्या है और इसकी हकीकत क्या है?
मैं सोचता हूँ
खुदा ने इस दुनिया में जितने भी मखलूक बनाए
उन सारी मखलूकों में
इन्सान इस कायनात की
सबसे पूरी...सबसे मुकम्मल...और...
कायनात की सबसे अजीब चीज भी है
अगर निडर हो तो...
शेर के मुँह में भी हाथ डाल देता है
और डरने पर आये तो...
एक मामूली सी चुहिया को देखकर चीख मारने लगता है
अगर फय्याजी व दरियादिली पर आये तो...

अपना घर-बार सब लुटा देता है
और तंगदिली दिखाए तो...
दूसरों के मुँह से निवाला तक छीन लेता है
अगर दोस्ती का हक अदा करे तो...
दोस्तों पे अपनी जान तक निछावर कर देता है
और दुश्मनी पर आये तो...
बेरहमी से व तड़पा-तड़पा कर दूसरों को मार डालता है
अगर बनाने पर आये तो...
रेगिस्तान को भी गुलजार बना देता है
और बिगाड़ने पर आये तो...
बने बनाए घर को जलाकर फूँक डालता है
अगर दिल में कसक महसूस करे तो
अपना तन-मन-धन सब वार देता है
और बेरहमी पर आये तो...
चीखों को सुनकर तालियाँ बजाता है
अगर मुहब्बत करे तो...
महबूब के तलवे से आँख रगड़ता है
और नफरत पे आये तो...
सामने वाले को झुकाकर
जमीन पर नाक से लकीर खिंचवाता है
अगर समझ-बूझ से काम ले तो...
आसमान में कमन्दें डाल देता है
और हिमाकत पर आये तो
खुद उस पेड़ की डाली को काटता है
जिस पर उसका बसेरा है
इन्सान क्या है और इसकी हकीकत क्या है
कुछ समझ में नहीं आता

मैं अक्सर सोचता हूँ
इन्सान की हकीकत क्या है?
माँ की गोद में नन्हा-मुन्ना सा वजूद
फिर पाँव-पाँव दौड़ता हुआ मासूम सा बच्चा
किताबें सँभाले हुए स्कूल जाता है नवउम्र लड़का
फिर मंजर बदलता है और उसकी जगह
थका हुआ अधेड़ उम्र आदमी
और, सबसे आखिर में
Count down में मसरूफ
लाठी थामे हुए मौत का मुन्तजिर एक बूढ़ा वजूद
यही कहानी सदियों से दोहराती चली आ रही है
और ताकयामत दोहराई जाती रहेगी
क्या है इन्सान की हकीकत?
कुछ समझ में नहीं आता
सच कहो तो
मुझे ऐसा लगता है जैसे...
मौत ही इन्सान की हकीकत है, सच्चाई है
जिसे हर कोई जानकर भी, समझ कर भी
जाने क्यों समझना नहीं चाहता?

अलविदा

अलविदा...अलविदा...अलविदा
जब से मैंने कह दिया
अलविदा...अलविदा...अलविदा...
आपकी यादों से...आपके वादों से...
साथ गुजारे आपके हर पल से...हर इक लम्हे से...
आपकी प्यार भरी बातों से...प्यार भरी शरारत से...
आपने जो खाई थी साथ में...
उन झूठी कसमों से...उन झूठे वादों से...
आपने ख्वाब दिखाये थे जो मेरी आँखों को
हर उस ख्वाब से...हर उस सपने से
जिन रास्तों पे सिखाया था आपने हाथ पकड़कर चलना
हर उस रास्ते से...
जिस मंजिल को पाने की ख्वाहिश
जगाई थी आपने मेरे शीशे से भी नाजुक दिल में
हर उस रास्ते से...हर उस मंजिल से...
जब से मैंने कह दिया
अलविदा...अलविदा...अलविदा
जब से मैंने कह दिया...अलविदा...अलविदा
आपकी कसम...
हर खुशी जो कल तक थी मुझसे रूठी हुई
आज हँस के मिलने लगी
कामयाबी फिर से मेरे कदम चूमने लगी
हार को भी लगने लगा मुझसे डर...
और जीत फिर मेरा मुकद्दर बनने लगी
एक बार फिर...मेरे बिना

हर महफिल हर समाँ अधूरा-अधूरा रहने लगा
एक बार फिर मैं बन गया
आसमान का एक चमकता हुआ सितारा...
एक उभरता हुआ सूरज...
जिसे दुनिया करने लगी है झुक के सलाम
और...
हर दुख...हर गम...
हाँ...
हर दुख...हर गम...हँस के कह रहा है मुझे
अलविदा...अलविदा...अलविदा...
जब से मैंने कह दिया
आपकी यादों से...आपके वादों से...
आपकी मुहब्बत से...आपके बेवफापन से...
और हर उस बात से...हर उस सोच से...
हर उस रास्ते से...हर उस शहर से...
जहाँ आप हों, आपकी यादें हों, आपकी बातें हों...
हाँ...कह दिया
जब से मैंने कह दिया
उन बातों से...उन सोचों से
उन रास्तों से...उन शहरों से
मैंने जब से कह दिया अलविदा
अलविदा...अलविदा...अलविदा...
हर खुशी मुझे मिलने लगी
जिन्दगी बोझ नहीं...जिन्दगी जिन्दगी लगने लगी।

मेरे दोस्त

ऐ खुदा मुझको बस इतना सा बता दे
चाहता हूँ जिसे अपने दोस्तों में सबसे ज्यादा
जो रहता है हर वक्त...हर लम्हा...
इस दिल से
हाँ इस दिल के सबसे करीब
मानता हूँ मैं जिसे खुद से भी ज्यादा
माना है जिसे अपना सबसे अच्छा दोस्त, अपना हमराज
हाँ मेरे खुदा उसे ही
मैं कैसे समझाऊँ...कैसे बताऊँ
मेरी जिन्दगी में उसकी अहमियत है क्या
किन अल्फाजों में करूँ अपने जज्बात उससे बयाँ
कर ले यकीन वो मेरे अल्फाजों पे
ले आये इमान वो मेरे हर उन अल्फाजों पे
हाँ हर उन अल्फाजों पे
अदा हो चुके हों जो मेरे जुबाँ से
ऐ मेरे खुदा
मुझे कुछ ऐसे अल्फाज सिखा दे
कि
मैं उसे बता सकूँ...समझा सकूँ
और दिला सकूँ यकीं
दुनिया की इस भरी महफिल में
फलक से लेकर जमीं तक...इस सारे जहाँ में
एक तुम ही तो हो मेरे दोस्त
जिसके साथ बाँटता हूँ मैं
अपनी हर खुशी...अपना हर दर्द...हर गम

जिसके कन्धे पर रखकर सर
बहाता हूँ मैं अपने सारे आँसू
चाहे वो हों गम के या हों खुशी के आँसू
और जो करता है
मुझे मुझसे भी ज्यादा जानने व समझने का दावा
कैसे समझाऊँ उसको कैसे बताऊँ
एक तुम्हीं तो हो मेरे दोस्त
ऐ खुदा मुझे बस इतना सा बता दे
कैसे समझाऊँ उसे कैसे बताऊँ
एक तुम्हीं तो हो मेरे दोस्त
जिसके लिए इस दिल ने बस इतना कहा
माना कि ये सच है
मेरे चाहने वालों की एक लम्बी कतार है
मेरे पास दोस्तों का एक लम्बा काफिला है
पर तुमने क्या कभी सोचा है
आसमान पे चमकने वाले सितारों की तादाद तो करोड़ों है
लेकिन चाँद उन करोड़ों सितारों में अकेला है
इकलौता है
तुम भी मेरे इकलौते दोस्त हो
आसमान पे चमकने वाले चाँद की तरह
बाकी सारे दोस्त तो आसमान पे चमकने वाले तारे हैं
हाँ मेरे खुदा
उस चाँद जैसे दोस्त को कैसे समझाऊँ
कैसे बताऊँ
ऐ खुदा मुझे बस इतना सा बता दे
उस चाँद जैसे दोस्त को कैसे समझाऊँ
कैसे बताऊँ

एक तुम्हीं तो हो मेरे दोस्त
जिसके लिए 'साहिल' इस दिल ने बस इतना कहा–
You are only one friend in my life
For which I decide
No complain and no demand
Only sacrifice and
want to sec smile on his lips everytime.

हसरत

आज बहुत दिनों बाद
दिल में...
एक अजीब सी ख्वाहिश उठी है
एक अजीब सी हसरत जागी है
जब से देखा है आपको
खुद की कसम
जिन्दगी में एक बार फिर
आज बहुत दिनों बाद
दिल में...
एक अजीब सी ख्वाहिश उठी है
एक अजीब सी हसरत जागी है

आपसे दोस्ती की ख्वाहिश व...
आपको दोस्त बनाने की हसरत...
हर वक्त,
हर पल,
हर लम्हा
बेचैन करता है मुझको
सच कहता हूँ
खुद की कसम
जब से देखा है आपको
दिल यही कहता है
काश...
आप मेरी दोस्त होतीं तो कितना अच्छा होता

जानता हूँ
हमारी-आपकी दोस्ती कभी मुमकिन ही नहीं
कहाँ आप आसमान का उभरता हुआ सूरज
और...
कहाँ मैं एक डूबता हुआ सूरज
कहाँ आप आसमान का एक चमकता हुआ सितारा
और...
कहाँ मैं वक्त व हालात की गर्दिशों से टूटता हुआ सितारा
अब आप ही बताओ...
उगते सूरज की दोस्ती,
डूबते सूरज के साथ कैसे हो सकती है?
आप तो एक चाँद हो...
जिसे हर कोई याद करेगा पर
मैं तो एक तारा हूँ
अपनी मन्नत पूरी होने की खातिर
लोग जिसके टूटने की दुआ करते हैं

जानता हूँ मैं...
बहुत अच्छी तरह जानता हूँ
हमारी-आपकी दोस्ती कभी मुमकिन ही नहीं
फिर भी जाने क्यों
जब से देखा है आपको
दिल यही कहता है
काश...
आप मेरी दोस्त होतीं तो कितना अच्छा होता

जब भी मेरी नजरें आपकी आँखों पे पड़ती हैं तो...

पता नहीं क्यों
मुझे ऐसा लगता है
जैसे...
ये आँखें कुछ बोलना चाह रही हों और...
आपने अपने होंठों पे जबरदस्ती की मुस्कान सजा कर
आँखों की जुबान को काटकर,
हमेशा के लिए गूँगा बना दिया हो
आपकी आँखों को देखकर
ऐसा लगता है
जैसे...
इन छोटी-सी झील सी आँखों में
आपने न जाने कितने
दर्द के काफिलों को डुबो रखा है
इन आँखों की छोटी-सी बस्ती में
आपने न जाने कितने
हसरतों के मजार बना रखे हैं
और...
काफिला-ए-दर्द व मजार-ए-हसरत को कोई देख न ले...
आँखों पे चश्मे का खूबसूरत पर्दा लगा रखा है
वाकई कितनी हसीन है
आपकी ये झील-सी आँखें
जिसकी तारीफ लफ्जों में करना...
आपकी आँखों के साथ बेईमानी सा लगता है

सच कह रहा हूँ
खुद की कसम
जब से देखा है आपको

दिल यही कहता है 'साहिल'
इतनी हसीन आँखों में,
काफिला-ए-दर्द अच्छा नहीं लगता
गुलाब से नाजुक होंठों पे,
काँटों सी मुस्कुराहट अच्छी नहीं लगती
इन काफिला-ए-दर्द व काँटों सी मुस्कुराहट को...
मेरे हवाले कर दे...
बदले में मेरी सारी खुशी ले ले
मुझसे दोस्ती कर ले...
मुझे अपना दोस्त बना ले
मुझ पे बस इतना-सा एहसान कर दे...
मेरी गुजारिश को सुन ले...
मेरी इल्तजा को मान ले
मुझ पे बस...
मुझ पे बस इतना-सा एहसान कर दे।

खुद की तलाश

आज मैं खुद को ढूँढ़ने चला हूँ
खुद को जानने, खुद को समझने चला हूँ
कोई है जो मुझे बता दे
मैं कौन हूँ...क्या चाहता हूँ
मुझे किस सफर पे जाना है
मेरी मंजिल कहाँ है
मैं कहाँ खो गया हूँ
मेरा असल वजूद क्या है और कहाँ है
आज मैं खुद को ढूँढ़ने चला हूँ

कोई है जो मुझे बता दे
क्यों मेरा खुद का चेहरा
आईने में अजनबी-अजनबी सा लगता है
इतना पराया-पराया सा लगता है
जैसे...
इस चेहरे को मैं पहली बार देख रहा हूँ
किसका है ये चेहरा
जो मुझ पे हँस रहा है और पूछ रहा है
कौन हो तुम
आज मैं खुद को ढूँढ़ने चला हूँ
खुद को जानने, खुद को समझने चला हूँ
कोई है जो मुझे बता दे

मैं तो हकीकत में किसी और से प्यार करता हूँ
तो फिर...

मैं उससे प्यार करने की ख्वाहिश क्यों कर बैठा
मैं तो पहले से ही किसी और का था
फिर क्यों उसका बनने की ख्वाहिश कर बैठा
मैं तो अपना हमसफर किसी और को बनाना चाहता था
राहे-जिन्दगी में किसी और का साथ चाहता था
फिर क्यों...
हाँ क्यों...
उसे अपना बनाने की ख्वाहिश कर बैठा
मेरी नजर में तो वो एक गन्दी लड़की थी
मैं तो उससे नफरत करता था
फिर मैं कैसे उसे अपने दिल में बसा बैठा
क्यों किया मैंने ऐसा

कोई है जो मुझे बता दे
मैंने तो कभी उससे प्यार किया ही नहीं
बस उसके प्यार को सच माना था
उसके प्यार को अपनाना चाहा था
फिर उससे बिछड़ने का गम क्यों है
दिल तो मेरे पास था ही नहीं
फिर सीने में दिल टूटने सी आवाज कहाँ से आई
ये सब क्या हो रहा है
मैं क्या चाह रहा हूँ
कुछ भी समझ में नहीं आता

कोई है जो मुझे बता दे
मुझे समझा दे
आज मैं खुद को ढूँढ़ने चला हूँ

खुद को जानने, खुद को समझने चला हूँ
कोई है जो मुझे बता दे
मुझे किस सफर पे जाना है
मेरी मंजिल कहाँ है
मेरा असल वजूद क्या है और कहाँ है
मैं कहाँ खो गया हूँ
आज मैं खुद को ढूँढ़ने चला हूँ
खुद को जानने, खुद को समझने चला हूँ
कोई है 'साहिल' जो मुझे बता दे
मैं कौन हूँ?

निबन्ध व उक्तियाँ

माँ

मेरी माँ, मेरी खुशी, मेरी हँसी, मेरी आरज़ू, मेरी जिन्दगी, मेरी दुनिया, मेरी हिम्मत, मेरी जन्नत, मेरी प्यारी माँ! अगर मैं तमाम उम्र काँटों पर चलूँ या अंगारों में जलूँ तो भी मैं तेरे एक भी एहसान का बदला नहीं चुका सकता। मेरी माँ, तूने मुझे जन्नत जैसे इस जहान में पैदा किया और जब मैंने अपनी आँखें खोलीं तो मैंने अपने आपको तेरी ममता और खुलूस भरी आगोश (बाँहों) में महफूज पाया और एक आँचल को अपने सर पर आसमाँ की तरह पाया जिसमें अदब, तहजीब, एतमाद, जज्बात, प्यार-मुहब्बत और इल्म नाम के बेशुमार तारों को बेहतरीन चमक के साथ जगमगाते हुए पाया। और जब भी मुझे तेरी खुलूस भरी गोद में नींद आई तो गुलशन में महकने वाली गुलों को, सागर में लहराने वाली लहरों को, हरी-हरी पत्तियों पर चमकती हुई शबनम की बूँदों को, दुनिया की खुशगवार रंगीन वादियों को अपने ख्वाबों में पाया। दुनिया के हर पेड़-पौधों पर बहारों के साथ-साथ खिजाओं का दौर भी जरूर आता है। ममता नाम के साये से लबरेज माँ नाम के शजर (पेड़) पर हमेशा दुलार, प्यार, चाहत, मुहब्बत नाम की बहारें आती हैं। खिजाँ नाम की शय तो इसके आस-पास भी नहीं फटकती है। बहुत खुशनसीब होते हैं वो लोग जिनके सरों पर हमेशा माँ-बाप की मुहब्बतों का साया रहता है। उन लोगों से पूछो माँ-बाप की अहमियत जिनके माँ-बाप मौत के आगोश में समाँ गए हों या उस दिल से पूछो माँ-बाप की अहमियत जिनको माँ जैसी जन्नत के दीदार ही नसीब न हुए हों। खुदा-ए-करीम के दिए हुए बेशुमार तोहफों में सबसे अनमोल,

सबसे अफजल, सबसे पाकीजा तोहफा माँ ही है। माँ का पूरा वजूद सर से लेकर पाँव तक एक मिसाल है। माँ के माथे पर ममता भरी चमक, माँ की आँखों में प्यार, माँ के हाथों में दुलार, माँ के अल्फाज में हिम्मत, माँ के दिल में मुहब्बत और माँ के कदमों के नीचे जन्नत होती है। हमें अपनी मुहब्बत, अपनी हिम्मत, अपनी जन्नत, अपनी प्यारी माँ को हमेशा खुश रखना चाहिए।

माँ क्या है?

- माँ एक अजीब हस्ती है।
- माँ ही इन्सान को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है।
- माँ एक ऐसा चिराग है जिसकी लौ कम भी हो जाए तो इसका उजाला कम नहीं होता।
- माँ की नाफरमानी करने वाला कभी सकून नहीं पाता।
- माँ वह अनमोल मोती है जो एक बार खो जाए तो फिर दोबारा नहीं मिलता।
- इन्सान जो कुछ बनता है माँ की दुआओं से बनता है।
- बेवजह दुआ देनेवाली सिर्फ और सिर्फ एक हस्ती होती है और वो है माँ।
- शायद माँ ही वो हस्ती है जो वली नहीं होती मगर उसके दिल पर भी आगाही के वाकयात उतरते हैं। मुहब्बत की केमिस्ट्री माँ से बढ़कर कोई नहीं जान सकता। जिसने मुहब्बत पैदा की एक वो इसे जानता है या फिर दुनिया में माँ का दिल जो ऊपर वाले की दी हुई इस मुहब्बत की राजदार है।
- वाकई माँ का दिल एक आँगन की तरह है जहाँ सारी औलादें एक साथ खेलती रहें तभी माँ की आँखें मुस्कुराती हैं। सारे बच्चे माँ के लिए मौसम की तरह होते हैं, हर मौसम की अलग पहचान और जरूरत है। कोई मौसम किसी दूसरे मौसम की जगह नहीं ले सकता।
- माँ को जब भी मुश्किल वक्त में याद करोगे इंशा अल्लाह मुश्किल आसान हो जाएगी।
- माँ की बद्दुआ से बचो, क्योंकि खुदा और माँ के बीच कोई दीवार नहीं है।
- माँ एक ऐसा वृक्ष है जिसकी छाया जिन्दगी की हर थकान को दूर कर देती है।

- माँ से बढ़कर कोई उस्ताद नहीं।
- माँ एक ऐसी किताब है जिसे बहुत कम लोग ही पढ़ पाते हैं।
- माँ की नाफरमानी सबसे बड़ा गुनाह है।
- माँ वो फूल है जो जिन्दगी भर खुशबू बिखेरता है।
- माँ को देखते ही आँखों को सकून मिलता है।
- माँ की गोद इन्सान की पहली पाठशाला है।
- माँ के पैरों तले जन्नत है।
- माँ के बगैर घर सुनसान लगता है।
- सख्त से सख्त दिल को भी माँ की पुरनम आँखों से मोम किया जा सकता है।
- माँ की मुहब्बत हकीकत की आईनादार है।
- माँ जिन्दगी की बेहतरीन मेमार और अल्लाह की सबसे अच्छी मखलूक है।
- माँ जन्नत है और जिन्दगी की रौनक है।
- माँ खुदा का जलवा और खुशी है इसलिए माँ को हमेशा खुश रखना जरूरी है।
- माँ एक ऐसी सीप है जो औलाद के हजारों ऐब छुपा लेती है।
- माँ एक छोटा-सा लफ्ज है लेकिन इसके कहने से दिल को सकून मिलता है। यूँ महसूस होता है जैसे धूप में खड़ा इन्सान छाँव में आ जाता हो। माँ एक अब्रे-रहमत और छाँव की तरह है जिसके नीचे बैठकर इन्सान ठंडक महसूस करता है। माँ एक डाली है जो अपने फूलों के सबब खूबसूरत दिखाई देती है। अगर डाली टूट जाए तो फूल भी बिखर जाते हैं और अगर फूल टूट जाए तो डाली वीरान हो जाती है।
- माँ का लफ्ज अदा करते वक्त दोनों होंठ एक दूसरे को चूम लेते हैं।
- दुनिया की तमाम खुशियाँ माँ के कहने से मिल जाती हैं।

- खुशकिस्मत है वो शख्स जो माँ की नसीहत पर अमल करे।
- औरत हुस्न और इश्क की देवी होती है जबकि माँ सिर्फ और सिर्फ एतबार और ममता से भरा वजूद होती है।
- किसी ने पूछा माँ क्या है? कौन है?

खुदा ने कहा—माँ मेरी तरफ से कीमती और नायाब तोहफा है।

समुद्र ने कहा—माँ एक सीपी है जो औलाद के लाखों राज सीने में छुपा लेती है।

बादल ने कहा—माँ एक धनक है जिसमें हर रंग जाहिर होता है।

औलाद ने कहा—माँ एक ऐसी हस्ती है जिसके पाँव तले जन्नत है।

शायर ने कहा—माँ एक गजल है।

नदी ने कहा—माँ एक किनारा है।

फूल ने कहा—माँ एक दिल-फरेब खुशबू है।

गुलकार ने कहा—माँ एक खूबसूरत गीत है।

तालिब-ए-इल्म ने कहा—माँ की गोद ही इसकी पहली दरसगाह है।

अमौसम ने कहा—माँ सावन का पहला कतरा है।

सहाफी ने कहा—माँ के बगैर हर एक घर कब्रिस्तान है।

समय

- वक्त एक ताजा दिन की शुरुआत है, देनेवालों ने इसलिए दिया यह दिन ताकि हम अपनी इच्छा से इसे जिएँ। चाहें तो गवाएँ, या चाहें तो बेहतर बना दें। हम आज क्या कर रहे हैं यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि हमने इसके बदले अपनी जिन्दगी का एक दिन दिया है। आने वाले कल के बाद यह दिन हमेशा के लिए खत्म हो जाता है, केवल उन्हीं कामों के निशान रह जाते हैं, जो हमने किए हैं। हमें नेकी की तलाश है—बदी की नहीं, पाने की चाह है...खोने की नहीं, कामयाबी का ख्वाब है—नाकामयाबी का नहीं। समय वह खजाना है जिसे किसी कीमत पर नहीं खोया जा सकता।
- समय का उपयोग बुद्धिमत्ता के साथ करें। ध्यान रखें कि सही काम के लिए सही समय का इन्तजार करना अच्छा होता है।
- समय का उपयोग हमेशा औजार की तरह करो, आरामदायक सेज की तरह नहीं।
- समय गँवाना धीमे-धीमे आत्महत्या करने के समान है।
- समय वह दरसगाह (पाठशाला) है जहाँ हम सीखते हैं और समय वह आग है जिसमें हम जलते हैं।
- अतीत में मत जियो और न ही भविष्य के सपने बुनो, खुद को वर्तमान क्षण में जीने के योग्य बनाओ।
- खोया समय कभी वापस नहीं आता।
- वह व्यक्ति जो जीवन का एक घंटा व्यर्थ गँवाता है, वह कभी जीवन का अर्थ नहीं खोज पाता है।
- जियो ऐसे कि कल ही मर जाओगे, सीखो-पढ़ो ऐसे जैसे सदा जिन्दा रहना है।
- तुम कहते हो कि समय गुजर गया लेकिन दरअसल समय तो यही है—तुम ही गुजर गए।

- समय उनके पास ज्यादा होता है जो इसका उपयोग कर पाते हैं।
- आज का दिन वस्तुतः बीते कल की स्मृति है और आने वाला दिन आज का सपना।
- हर आदमी अपने गुजरे हुए कल को खो चुका है, कामयाब वो है जो अपने आज को न खोए।
- समय को हाथ से जाने देना रंजो-गम का सबब है।
- अपने-आपको वक्त के रहमोकरम पर बेसहारा समझकर छोड़ देना बुजदिली है।
- आने वाले समय के लिए पहले से सोच लेना चाहिए ताकि जब वह समय आए तो हम पूरे जोश से उसका स्वागत करें और अपने सोचे हुए काम को अंजाम दे सकें।
- हमारा कल हमारे आज पर टिका हुआ है। हम आज जो फैसला करते हैं वही हमारे कल का फैसला करेगा। सही और गलत के बीच फैसला करना तो आसान है लेकिन दो सही रास्तों में बेहतर चुनना और दो गलत रास्तों में मुनासिब चुनना यही फैसले हमारे जिन्दगी के फैसले करते हैं।
- वक्त अपनी रफ्तार से गुजरता रहता है। समय न तो हमारी परिस्थितियों के हिसाब से चलता है और न ही कभी हमारे लिए रुकता है।
- वक्त की रफ्तार भी ऐसी होती है कि अचानक ही हमें ये एहसास होता है अब हमारे पास नहीं है जबकि थोड़ी देर पहले हम यह सोचकर निश्चिन्त हो चुके थे कि हमारे पास काफी समय है।
- मेरा मानना है कि खुदा ने सभी इन्सानों को सीमित समय दिया है चाहे वो अमीर हो या गरीब। इस समय में से न तो कुछ भी वापस मिलता है और न ही दोहराया जा सकता है। इसलिए खुदा के इस अनमोल तोहफे का हम जितना ज्यादा फायदेमन्द इस्तेमाल कर सकें उतना ही अच्छा है। आम आदमी सोचता है कि नौ से

पाँच हमारी जिन्दगी है पर यह क्लर्क जैसी मानसिकता होती है और कुछ नहीं। इसे उल्टा कर लें और सुबह पाँच से लेकर रात नौ बजे तक अपने जीवन को चलाएँ तो देखें जिन्दगी कहाँ ले जाती है। प्रबन्धन ही कर्म है, प्रबन्धन सोचना, पूछना और करना है। ऐसे ही सोच रखने से बिल गेट्स संसार के सबसे समृद्ध व्यक्ति बने। इस सोच में आपका नजरिया बहुत मायने रखता है। आप बुरा भी सोच सकते हैं और अच्छा भी, इसलिए मनोवृत्ति सही रखिए। कैसे सोचें यह भी महत्वपूर्ण है। तो कुछ देर के लिए कुछ मत कीजिए, समय को भूल चिन्तन-मनन कीजिए। जब आप कुछ महत्वपूर्ण कर रहे होते हैं, लक्ष्यों को निर्धारित कर काम शुरू कीजिए। जिसमें आत्मसम्मान व आत्मविश्वास है वह हर काम सोच-समझकर, उचित सलाह लेकर ही करता है। सफलता का सिद्धान्त है कि सफलता को व्याख्या की जरूरत नहीं होती। सफलता एक निरन्तर यात्रा है, सिर्फ मंजिल तक नहीं। अपनी कमजोरी को पहचान उन्हें दूर कीजिए। एक कमजोर कड़ी पूरी जंजीर के लिए मुसीबत बन जाती है। इसलिए मैं कहता हूँ आप भले ही कितने भी गुणवान हों, यदि उन गुणों का प्रयोग करना नहीं जानते हैं तब तक वे बेकार हैं।

- बीता हुआ वक्त कभी लौटकर नहीं आता। इसलिए यह जरूरी है कि हर काम समय रहते ही कर लिया जाए। जो वक्त को नियामत नहीं मानता वक्त अक्सर उससे आगे निकल जाता है और वह केवल हाथ मलता रह जाता है।
- आज हम सबके पास समय की इतनी कमी है कि वक्त की पाबन्दी के बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता। हमारे लिए एक-एक पल महत्वपूर्ण है और इसे बर्बाद करने की बेवकूफी के अलावा कुछ नहीं कहा जाएगा।
- सफलता उन्हीं व्यक्तियों के कदम चूमती है जो वक्त की कद्र

करते हैं अन्यथा साथ वाले आगे निकल जाएँगे और हम खड़े हाथ मलते रह जाएँगे। हर काम को करने का एक उचित समय होता है और अगर यह तब न किया जाए तो फिर उसे कभी नहीं किया जा सकेगा।

- जो लोग समय की कद्र नहीं करते उनके अन्दर दूसरे के ऊपर दोषारोपण करने की विशेष प्रवृत्ति होती है और धीरे-धीरे वो दुनिया से कट जाते हैं। ऐसे व्यक्ति खुद तो परेशान रहते ही हैं और साथ ही साथ औरों की परेशानी का भी सबब (कारण) बनते हैं। बेहतर है कि हम जल्दी ही समय की कीमत पहचान लें और अपनी तरक्की की राह पर आगे बढ़ें।
- इन्सान को आज का, आज के हर लम्हे का ज्यादा-से-ज्यादा और बेहतर-से-बेहतर इस्तेमाल करने की आदत डालनी चाहिए।
- अगर हमने यह मान लिया कि हमें आज कुछ-न-कुछ सीखना है और इस दिन को यूँ ही नहीं जाने देना है तो हमारा काफी काम आसान हो जाता है। आज के समय का सदुपयोग और थोड़ी-सी मेहनत आने वाले कल में काफी काम आती है।
- वक्त तो अपनी रफ्तार से चलता ही रहता है। हमें करना बस यह है कि अपने सीखने की रफ्तार को कुछ ऐसा रखना है कि हम वक्त से पिछड़ न जाएँ।
- हमें अपने गुजरे हुए कल के पीछे नहीं भागना चाहिए। जो चीजें हमसे दूर हो रही हों या दूर हो गई हों उनके ऊपर वक्त बर्बाद नहीं करना चाहिए। चाहे हमारा बीता हुआ कल खुशियों भरा हो पर उपस्थित समय की उपेक्षा हमें कभी नहीं करनी चाहिए। अगर हमारे बीते हुए कल में परेशानियाँ ज्यादा हैं तब भी हमें वर्तमान का स्वागत करना चाहिए। जिन्दगी इतनी छोटी होती है कि हम अगर बीते हुए कल में ही खोए रहेंगे तो हमारा ही नुकसान होगा। गुजरे हुए वक्त की सारी बातें भूलकर केवल यह

याद रखनी चाहिए कि जिन्दगी को बेहतर बनाने के लिए समय का सदुपयोग बहुत जरूरी है।

- हमारे लिए सिर्फ यह जरूरी नहीं कि हम एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व ही जिएँ बल्कि जरूरी यह है कि हर पल को महत्वपूर्ण बनाने का प्रयास करें।
- हमें अगर अपनी जिन्दगी को कामयाब बनाना है तो हमें जीने का तरीका बदलना होगा। लगातार बीत रहे वक्त के हर पल की कीमत हमें समझनी होगी और उसे काम में लाना होगा।
- हमें कभी भी अपने किसी एक दिन को कम महत्वपूर्ण नहीं समझना चाहिए और हमेशा अपने पूरे दिन का आकलन करते रहना चाहिए क्योंकि हम जब हफ्ते भर बाद डायरी को देखें तो खुद-ब-खुद पता चल जाएगा कि हमने किस दिन का वाकई में उपयोग किया है।

तीन चीजें

- तीन चीजें हमेशा पर्दा चाहती हैं—दौलत, खाना और औरत।
- तीन चीजें हरेक की जुदा-जुदा हैं—सूरत, सीरत और किस्मत।
- तीन चीजें हर एक को प्यारी हैं—औरत, औलाद और दौलत।
- तीन चीजें खुलूस से करनी चाहिए—रहम, दुआ और भलाई।
- तीन चीजें कभी छोटी न समझो—कर्ज, फर्ज और मर्ज।
- तीन चीजें सख्त-तर हैं—जवानी में मुफलिसी, सफर में बीमारी और तंगदस्ती में कर्ज।
- तीन चीजें छुपाए नहीं छुपतीं—झूठ, मुहब्बत और रकावत।
- तीन चीजें मुहब्बत की बुनियाद हैं—सच्चा जज्बा, एतबार और एतमाद।
- तीन चीजें जिन्दगी में बस एक बार मिलती हैं—माँ-बाप, हुस्न और जवानी।
- तीन चीजें भाई को भाई का दुश्मन बना देती हैं—जन, जर और जमीन।
- तीन चीजें हमेशा याद रखनी चाहिए—सच्चाई, काम और मौत।
- तीन लफ्जों से ही जिन्दगी के मायने जिन्दा होते हैं—कोशिश, जद्दोजहद और रियाज।
- तीन चीजों का एहतराम करना चाहिए—माँ-बाप, उस्ताद और किताब।
- तीन चीजों पर हमेशा काबू रखना चाहिए—गुस्सा, जवान और दिल।
- तीन चीजों से कभी मुहब्बत पैदा नहीं होती—हुस्न, जवानी और दौलत।
- तीन चीजें बहुत सोच-समझकर उठानी चाहिए—कलम, कसम और कदम।

- तीन चीजें इन्सान के मरने के बाद भी काम आती हैं–

  1. सदका जरिया

  2. वह इल्म जिससे दूसरों को फैज पहुँचती है

  3. नेक औलाद जो इनके लिए दुआ करती है

- हजूर के मुताबिक तीन शख्स जिस पर दोजख की आग हराम है–नर्म मिजाज का शख्स, नर्म तबियत का शख्स और नर्म लहजे वाला शख्स।
- तीन चीजें कभी जाहिर (open) मत करो–किसी का ऐब, किसी का राज और दिल का राज।
- तीन चीजें कभी मत भूलो–मौत को, कर्ज को और किसी के एहसान को।
- तीन चीजों से दूर भागो–बुरी सोहबत से, तोहमत से और झगड़े से।
- तीन बुराइयाँ अच्छे काम से कम (खत्म) हो जाती हैं–बोरियत, गरीबी और गुनाह।
- तीन चीजें हमेशा जलील करती हैं–चोरी, चुगली और झूठ।
- तीन चीजों से हद से ज्यादा मुहब्बत अक्ल को अन्धा कर देती है–दौलत, औरत और अना।
- तीन चीजों के साथ रहने वाला इन्सान मौत को हमेशा साथ रखता है–कुल्टा पत्नी, धोखेबाज दोस्त और जवाब देनेवाला नौकर।
- तीन आदमी में राज राज रह सकता है शर्त यह है कि उनमें से दो मर चुके हों।
- तीन चीजें कभी वापस नहीं आ सकतीं–जबान से निकली बात, कमान से निकला तीर और जिस्म से निकली जान।
- तीन लोग वक्त पर पहचाने जाते हैं–साबिर मुसीबत पर, बहादुर मुकाबले पर और भाई जरूरत पर।

- तीन चीजें मुहब्बत बढ़ाने का जरिया हैं—इल्म, दूसरों के लिए महफिल में जगह खाली करना और खामोशी।
- तीन चीजें हर हाल में अपने आपको साबित करो—बुलन्द अखलाक, बुलन्द ख्याल और बुलन्द मेयार।
- तीन चीजें ईमान की निशानी हैं—आहिस्ता बोलना, नीची निगाह रखना और मियाना चाल चलना।
- तीन मखलूक हमेशा झुककर वार करती हैं—साँप, बिल्ली और बड़ा आदमी।
- इन्सानी जिन्दगी में किताब तीन अहम किरदार निभाती हैं—जवानी में रहनुमा, बुढ़ापे में तफरीह और तन्हाई में दोस्त।
- तीन चीजें लोगों को आपस में इतना नहीं जोड़तीं जितना किसी चीज से नफरत उन्हें जोड़ देती है—मुहब्बत, दोस्ती और एहतराम।
- तीन चीजें इंसाफ की दुश्मन होती हैं—गुरूर, जुल्म और गुस्सा।
- तीन चीजें ऐसी हैं जिनका अन्दाजा इन्सानी दिमाग नहीं लगा सकता—गुनाह, जिन्दगी के दिन और दुश्मन।
- तीन चीजों का नाम ही दोस्ती है—एतमाद, चाहत और वफा।
- आदमी के तीन दोस्त हैं—एक तो रूह के कब्ज होने तक साथ देता है, दूसरा कब्र तक और तीसरा कयामत तक। कब्जे रूह तक का साथ तो माल है, कब्र तक साथ उसके घरवाले और कयामत तक के साथी उसके अमाल हैं।
- हजूर के मुताबिक मुसलमान की कौम उस वक्त तक खुशहाल रहेगी जब तक उसमें तीन चीजें बाकी रहेंगी—बातें करें तो सच बोलें, लोगों का फैसला करें तो इंसाफ से काम लें और लोगों पर रहम करें।
- तीन चीजों पर हमेशा यकीन रखो—खुदा, रसूल और आखरत।
- तीन चीजों को जरूर अपनाओ—अखलाक, ईमान और हलाल रोजी।

- तीन चीजें कभी मत ठुकराओ—खुलूस, तोहफा और दावत।
- तीन चीजें हर किसी को मिलती हैं—खुशी, गम और मौत।
- तीन चीजें मुहब्बत के लिए जरूरी हैं—फूल, दिल, अखलाक।
- तीन चीजें एक ही जगह परवरिश पाती हैं—खुशबू, काँटा और फूल।
- Three things to watch—Beauty, Behaviour and action.
- Three things to love—Purity, honesty and hardwork.

दोस्त और दोस्ती

- दोस्ती भावनाओं व जज्बातों का रिश्ता है। यह रिश्ता है दिलों का जो सारे रिश्ते का पूरक होता है। इसलिए हमेशा दोस्त चुनते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए और एक बार अगर हम किसी को दोस्त बनाएँ तो उसका साथ देने में कभी पीछे नहीं रहना चाहिए।
- दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जिसे बनाने या निभाने के लिए हम पर किसी तरह का सामाजिक या नैतिक दबाव नहीं होता शायद तभी इस रिश्ते को टूटने में ज्यादा वक्त नहीं लगता।
- किताब और दोस्त हमेशा कम और अच्छे होने चाहिए।
- गर्मी और सर्दी की शिद्दत में भी वो चुभन नहीं जो दोस्तों की बेरुखी में है।
- जान-पहचान को हम दोस्ती नहीं कह सकते।
- दोस्त को उसकी सूरत से नहीं सीरत से पहचानो।
- जो लोग मामूली-मामूली बात पर रूठ जाते हैं उनसे दोस्ती रखने से बेहतर है कि किसी बच्चे से दोस्ती कर ली जाए।
- अच्छे दोस्त जिन्दगी के दस्तरखान पर नमक की तरह होते हैं जिसके बगैर तमाम लज्जतें फीकी होती हैं।
- दोस्ती का रिश्ता खून के रिश्ते से भी मजबूत होता है।
- जब तुम्हें कोई सच्चा दोस्त मिल जाए तो समझो खुदा तुमसे खुश है।
- माजी को भूलने वाला शख्स सबसे पहले अपने दोस्त से बेवफाई करता है क्योंकि दोस्त हाल और मुस्तकबिल (future) में नहीं बल्कि माजी (past) में मिलते हैं।
- दोस्ती एक पाकीजा जज्बा है। दोस्ती की लाज रखना उतना ही मुश्किल है जितना तूफान को रोकना।

- दोस्ती इन्सान को गम के अँधेरे से निकालकर रौशनी में खड़ा कर देती है।
- फूल कितने हसीन होते हैं लेकिन दोस्ती फूलों से बढ़कर हसीन होती है।
- फूल मुरझा जाते हैं लेकिन दोस्ती हमेशा जिन्दा रहती है।
- सच्चा दोस्त वो है जिसकी मुहब्बत अनमोल और खुलूस बेमिसाल हो।
- जिस राज को दुश्मनों से छुपाना चाहते हो उसे दोस्त पर भी जाहिर मत करो।
- दोस्ती चट्टानों की तरह सख्त, आबगीनों की तरह नाजुक और फूलों की तरह हसीन होती है।
- दोस्ती इस कायनात का एक ऐसा रिश्ता है जो कभी नहीं मरता।
- अपनी कामयाबी हासिल करना चाहते हो तो किताबों से दोस्ती करो।
- बुरी सोहबत से तन्हाई अच्छी है।
- दिल में रहने वाले दोस्त सबसे खराब किरायेदार होते हैं क्योंकि–
  1. वे आपके दिल पर कब्जा कर लेते हैं।
  2. उसका किराया भी नहीं देते।
  3. और जब जाते हैं तो दिल को तोड़ देते हैं।
- दोस्ती एक ऐसी नाव है जो जिन्दगी की नदी को पार करने में हमारा साथ देती है।
- बुरे दोस्तों से बचो क्योंकि वो तुम्हारा तआरुफ बन जाते हैं।
- दोस्ती एक ऐसा फूल है जिसमें भूले से भी कोई काँटा नहीं होना चाहिए।
- दोस्ती करो तो दोस्ती निभाओ, चाहे इसमें तुम्हारी जान ही क्यों न चली जाए।

- जो अपने दोस्त को छोड़ता है वो अपने दुश्मन को ताकत देता है।
- एक समझदार शख्स के लिए अच्छे दोस्त की जुदाई से बड़ा कोई नुकसान नहीं।
- दोस्ती एक मददगार हाथ की तरह है, जब भी जरूरत पड़े काम आए।
- दोस्ती एक मुकम्मल दुनिया है। साल गुजर जाते हैं मगर दोस्ती हमेशा-हमेशा कायम रहती है।
- हमें हमेशा दोस्त बनाते समय अपने दोस्त को पहले अपनी कसौटी में परखना चाहिए और एक बार दोस्ती करने के बाद हमेशा साथ निभाने वाला भाव भी होना चाहिए। फिर चाहे खुशी हो या गम, हमें अपने दोस्तों का साथ देने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए, तभी हम अपने बुरे वक्त में किसी के साथ की उम्मीद भी कर सकते हैं।
- दोस्ती एक मददगार हाथ की तरह है, जब भी जरूरत पड़े काम आए।
- दोस्ती एक मुकम्मल दुनिया है। दिन, तारीख, महीने, साल गुजर जाते हैं मगर दोस्ती हमेशा-हमेशा के लिए कायम रहती है।
- एक बहुत ही खूबसूरत व पाक जज्बे का नाम है दोस्ती।
- इंसानियत ने हजारों साल पहले पहाड़ों की बुलन्दी, झरनों का तरन्नुम, कलियों की मासूमियत, फूलों का तबस्सुम और खलूसो-मुहब्बत के समुद्र को एक साथ जमा किया और फिर प्यारा सा नाम दिया–'दोस्ती'।
- दोस्त वो है जो तुम्हारे मिजाज के हर मौसम को हँसकर सह जाए।
- जिसने कभी किसी को दुश्मन नहीं बनाया, वो कभी किसी को

दोस्त नहीं बना सकता।

- हजारों दोस्त की दोस्ती को एक शख्स की दुश्मनी के बदले न खरीदो।
- दोस्तों को आजमाओ जरूर पर इतना मत आजमाओ कि वो तुम्हें आजमाइश में डाल दें।
- दोस्तों को नसीहत हमेशा अकेले में करो और तारीफ सबके सामने करो।
- दोस्ती खूबसूरत चेहरे से मत करो क्योंकि यह अक्सर दिल के काले होते हैं।
- उससे बड़ा गरीब कोई नहीं है जिसका कोई दोस्त न हो।
- गुलदाऊदी ऐसे मौसम में खिलता है जब कोई और फूल नहीं खिलता है। सच्चा दोस्त भी ऐसे मौसम में ही साथ देता है। जब कोई और साथ नहीं देता।
- दोस्ती वो रोशनी है जिसके जरिए इन्सान गम के अँधेरे से निकल जाता है।
- वही दोस्त काबिल-ए-कद्र है जो सच्चा, पुरखलूस ईमानदार व प्यार करने वाला हो।
- जबान से दोस्त कहना तो आसान है लेकिन दोस्ती निभाना बहुत ही मुश्किल।
- दोस्ती की लाज रखना उतना ही मुश्किल है जितना आते हुए तूफान को रोकना।
- दोस्तों को बार-बार आजमाने का ख्याल कभी भी दिल में नहीं लाना चाहिए, क्योंकि अगर हम उससे कोई फरमाइश करेंगे और वो किसी मजबूरीवश हमारी फरमाइश पूरी न कर सके तो हम एक अच्छे दोस्त से महरूम हो जाएँगे।

- दोस्ती और निशानी

मालदार की दोस्ती = मतलब की निशानी
कंजूस की दोस्ती = बर्बादी की निशानी
बेवकूफ की दोस्ती = खतरे की निशानी
जाहिल की दोस्ती = जिल्लत की निशानी
जुआरी की दोस्ती = तबाही की निशानी
झूठे की दोस्ती = रुसवाई की निशानी
बेनमाजी की दोस्ती = जहन्नुम की निशानी

खुशी

- खुशी क्या है या खुशी किसे कहते हैं—जब कोई दुआ पूरी हो, कोई ख्वाहिश पूरी होकर जिन्दगी का हिस्सा बन जाए और जिन्दगी में जीने की उमंग भर जाए और आपका दिल आपके जज्बात को, आपकी feeling को हर पल celibrate करना चाहे तो वह पल खुशी का होता है।
- जिन्दगी का सबसे बड़ा फन खुश रहना है, अगर तुम खुश रहोगे तो जिन्दगी तुम्हारे साथ रहेगी।
- दूसरों की खुशी के लिए अपनी खुशियाँ कुर्बान करना इंसानियत की मेराज है।
- खुशी को हमेशा बाँटो क्योंकि खुशी बाँटने से बढ़ती है।
- उस खुशी से बचो जो कल गम का काँटा बनकर दुख दे।
- खुश रहना है तो दूसरों की खुशी का ख्याल रखो।
- हर हाल में खुश रहने वाले कभी उदास नहीं होते।
- खुशी को हमेशा की चीज मत समझो, खुशी के लम्हे बहुत छोटे होते हैं।
- खुशी हमसे किसी तरह की माँग नहीं करती और बदले में बहुत कुछ देती है। खुश रहकर हम अनजाने में ही बहुत से लोगों को खुश कर देते हैं और इससे हमारे आस-पास का माहौल भी खुशनुमा बनता है।
- खुशी हमें कभी सच्चाई भुलाने को नहीं कहती। यह केवल सकारात्मक सच्चाई दिखाती है। हर घटना के दो पहलू होते हैं। अगर हम अपने मन में यह सोच लें कि हमें खुश रहना है तो हम हमेशा सकारात्मक पहलू को ही देखेंगे और खुश रहेंगे।
- खुशी हमारे अन्दर होती है। अगर हम खुश रहने की कला सीख लें तो हम किसी भी परिस्थिति का सामना हँसते हुए कर सकते हैं।

- हर हाल में खुश रहना जिन्दादिली की निशानी है।
- खुश रहने के लिए जरूरी नहीं कि आपको खुशी मिले दूसरों को खुश रखकर भी खुश रहा जा सकता है।
- खुशी की हालत में कभी किसी से वादा न करो और गुस्से की हालत में कभी किसी को खत मत लिखो।
- जब तुम्हारा गम या खुशी हद से बढ़ जाए तो दुनिया तुम्हारी नजर में छोटी हो जाएगी।

जिन्दगी

- जिन्दगी एक सफर है जो पैदाइश से शुरू होती है और मौत पर खत्म हो जाती है।
- जिन्दगी एक आईना है जिसमें इन्सान् अच्छे-बुरे हर काम को अपने दिल के आईने में देख सकता है।
- जिन्दगी एक इन्द्रधनुष है जिसमें इन्सान अपनी मुहब्बत के हर रंग को भरकर अपनी जिन्दगी को खुशरंग बना सकता है।
- जिन्दगी एक फूल की तरह है जो खूबसूरत होने के साथ-साथ मुहब्बत की खुशबू से भरी होती है।
- जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है। लोगों को खुशियाँ देकर इसे खुशगवार बनाना सीखो।
- जिन्दगी किसी के लिए भी सिर्फ गुलाब का फूल नहीं साबित होती। फूल हमेशा काँटों वाली टहनी के साथ ही मिलता है।
- जद्दोजहद से जिन्दगी का राज छुपा हुआ है।
- जिन्दगी गर्म रोगिस्तान की तरह है जहाँ से पाँव को रेत की गर्मी से बचा-बचाकर चलना पड़ता है।
- जिन्दगी को बेमकसद व बेमतलब जीने का कोई फायदा नहीं। एक सफल जिन्दगी वही होती है जिसमें कोई ऐसा काम किया जाए जिससे हमारे जीवन को एक दिशा मिले।
- जिन्दगी एक फर्ज है, इसे हर हाल में अदा करो।
- कामयाब जिन्दगी के लिए हमेशा जद्दोजहद करनी पड़ती है।
- सच है अपनों की गलतियाँ, कोताहियाँ माफ कर देने में ही भलाई है। चार दिन की जिन्दगी में सब साथ मिलकर खुशियाँ मना लें तो जिन्दगी का मजा है। गिले-शिकवे दूर करके सबको मुहब्बत बाँटें, यही जिन्दगी है।
- बदलाव, जिन्दगी और कायनात का पहला उसूल है। कोई शख्स

दरिया के एक ही पानी में दो बार नहीं नहा सकता।

- जिन्दगी के लम्बे सफर में हर मुकाम को अपनी मंजिल समझ लेना नादानी है।
- जिन्दगी में जब कभी महसूस करो कि तुम्हारे पास ऐसा कोई नहीं है जिससे तुम अपने दिल की बात कह सको तो फिर रो लो क्योंकि जब बारिश होती है तो आसमान बिल्कुल साफ नजर आता है। बिल्कुल इसी तरह रोने से दिल का बोझ भी हल्का हो जाता है।
- जिन्दगी में याद उन्हें किया जाता है जिन्हें भुला दिया जाए और जो लोग दिल के करीब होते हैं उन्हें याद नहीं किया जाता।
- जिन्दगी एक सफर है इसे मुकम्मल करो।
- अपने लिए जीना कोई जिन्दगी नहीं बल्कि दूसरों के लिए जीना असल जिन्दगी है।
- जिन्दगी एक फूल है, जिसे खिलने और मुरझाने में देर नहीं लगती।
- जिन्दगी एक किताब है जिसे वर्क पलटने और बन्द होने में पल भर का भी वक्त नहीं लगता।
- जिन्दगी एक शमा है जो जलते-जलते आखिरकार बुझ जाती है।
- जिन्दगी एक चाँद है जो मौत के आगोश में छिपती है।
- जिन्दगी एक खूबसूरत तितली है जो अपने खूबसूरत पर दिखाकर हर इन्सान को बहकाती है और फिर देखते ही देखते फूलों से लदी क्यारी में गुम हो जाती है।
- जिन्दगी खुदा का दिया हुआ एक हसीन तोहफा है। इसे मुस्कुराकर जीना सीखो।
- जिन्दगी में कभी गम का एहसास हो तो खुद को बेहद मसरूफ कर लो गम का एहसास खुद-ब-खुद कम हो जाएगा।
- जिन्दगी में हमेशा मुस्कुराते रहो, फासले कम करो और दिल मिलाते रहो।

- जिन्दगी एक तल्ख हकीकत है इसका सामना करो।
- जिन्दगी में सुख-दुख न हो तो जिन्दगी जीने का क्या फायदा?
- जिन्दगी फना होने वाली है। इससे सबक हासिल करो।
- जिन्दगी एक सवाल है इसका जवाब दो।
- जिन्दगी एक किताब है लेकिन बहुत कम लोग ही पढ़ना चाहते हैं और पढ़ते हैं।
- जिन्दगी का फलसफा मौत है।
- इन्सानी जिन्दगी दुनिया में उस शमाँ की तरह है जो हवा में रखी गई हो, जिसके बुझने का डर हमेशा हम पर हावी रहता है।
- जिन्दगी कोयल की तरह सुरीली और साँप की तरह जहरीली होती है।
- जिन्दगी एक ऐसा लिबास है जो फट जाए तो दोबारा नहीं खरीदा जा सकता।
- जिन्दगी एक शमाँ का नाम है जो पिघलते-पिघलते आखिरकार खत्म हो जाती है।
- जिन्दगी पानी का एक बुलबुला है जो लम्हा-भर को उठता है और खत्म हो जाता है।
- जिन्दगी एक ऐसी ट्रेन है जो हमेशा ऐसे स्टेशन पर रुकती है जहाँ आपको उतरना ही नहीं होता।
- जिन्दगी एक 'दीया' है जो इंसानियत की लौ से रौशन किया गया है।
- जिन्दगी उस शमाँ की तरह है जो मद्धम होने के बावजूद चिंगारी की किसी लौ से दोबारा रौशन हो जाती है।
- जिन्दगी एक खुली किताब की तरह है जिसके पन्ने अक्सर नाकामयाबी और कामयाबी से तहरीर किए जाते हैं।
- जिन्दगी के बहुत सारे रंग हैं उनमें से सबसे खूबसूरत रंग दुखी इन्सानों से प्यार है।

- जिन्दगी एक कहानी है जो मौत आने पर खत्म हो जाती है।
- जिन्दगी एक ख्वाब है जिसकी ताबीर मौत के बाद मिलती है।
- जब लोगों को यह पता चलता है कि जिन्दगी क्या है तब तक आधी जिन्दगी गुजर चुकी होती है।
- जिन्दगी और मौत में सिर्फ और सिर्फ साँस का फर्क होता है।
- जी लेना और जिन्दा रहना, जिन्दगी के दो अलग-अलग खेल हैं। एक में मजबूरी झलकती है तो एक में खुशी।
- ज़िन्दगी को किसने क्या कहा—

  ज़िन्दगी इल्म है = Teacher ने कहा।

  ज़िन्दगी अदालत है = वकील ने कहा।

  ज़िन्दगी अस्पताल है = Doctor ने कहा।

  ज़िन्दगी जेल है = जेलर ने कहा।

  ज़िदगी ग़ज़ल है = शायर ने कहा।

  जिन्दगी संगीत है = संगीतकार ने कहा।

  जिन्दगी मेरे बच्चे हैं = माँ ने कहा।

  जिन्दगी एक रहस्य है = Scientist ने कहा।

  जिन्दगी एक अजाब है = नाकाम आशिक ने कहा।

  जिन्दगी एक सफर है = मुसाफिर ने कहा।
- I think our life is like a along film. God is like a famous director, we are like an actor, our life (Girlfriends of Wife) is like an actress and death is like end of film.
- There are only three events in a man's life—Birth, Life and Death.
- There are only two things to aim at in life—First you get what you want and after that enjoy it.
- We get life only once time, so don't distroy it.
- We make a living by what we get and we make life by what we give.

- Life is a river. Virtue is its bathing place. Truth is its water. Moral convection are its bank. Mercy is waves Bathing in such a pure river make our lives blassed.
- Mathematics of life
  Add the friend
  Substract the enemy
  Multiply the joy
  And divide the sorrow.

...के बगैर...

- अपने कद को बगैर हील के लम्बा करने के लिए अपनी शख्सियत को बुलन्द करो।
- चेहरे का रंग बगैर मेकअप के भी दिलकश दिखाई देता है अगर दिल का रंग साफ हो।
- होंठ बगैर लिपस्टिक के भी खूबसूरत नजर आ सकते हैं अगर होंठों से अच्छी और प्यारी बातें की जाएँ।
- पलकें बगैर मशकारे के भी दिल को लुभा सकती हैं अगर शर्म से और किसी की इज्जत में झुकी हों।
- आँखों में चमक बगैर काजल के भी आ सकती है अगर वह जहानत से भरपूर हो।
- चेहरे पर चमक हुस्न के बगैर भी आ सकती है अपने किरदार व दिल को खूबसूरत बनाकर।

...है तो...

- दुनिया में जीना है तो...शान से जीयो।
- बोलना है तो हमेशा सच बोलो।
- इज्जत करनी है तो बड़ों और शरीफों की करो।
- प्यार करना है तो छोटों से करो।
- सीखना है तो इल्म की बातें सीखो।
- हँसना है तो अपने आप पर हँसो।
- कमाना है तो इज्जत कमाओ।
- लड़ना है तो अपने ख्वाहिशात (नफस) से लड़ो।
- करना है तो अच्छा काम करो।
- मरना है तो ईमान व वतन के लिए मरो।
- हुक्म मानना है तो खुदा, कुरान, रसूल व बड़ों का मानो।
- खुश रखना है तो माँ-बाप को खुश रखो।
- दुआ लेनी है तो माँ की लो।
- याद रखना है तो खुदा, रसूल, माँ-बाप व वतन को याद रखो।

चार आदमी

हर इन्सान को चार आदमी से हमेशा दूर रहना चाहिए–

- फासिक से = वह तुम्हें एक लुकमे से भी कम में बेच देगा।
- बखील (कंजूस) से = वह उस चीज को जिसकी तुम्हें सबसे ज्यादा जरूरत होगी, तुमसे दूर कर देगा।
- कज्जाम से = वह शराब की तरह करीब को तुमसे दूर और दूर को करीब कर देगा।
- अहमक से = वह तुम्हें फायदा पहुँचाने की कोशिश करेगा मगर नुकसान पहुँचा देगा।

काबू रखो

- गुस्से में हो तो अपने आप पर।
- परेशान हो तो जज्बात पर।
- मुसीबत में हो तो हौसले पर।
- तन्हाई में हो तो अपने ख्यालात पर।
- महफिल में हो तो अपनी जबान पर।

किस्मत

- किस्मत वह मार्केट है जहाँ जद्दोजहद कीमत को बढ़ाती है और काहिली उन्हें घटाती है।
- किस्मत मिलकियत के तौर पर नहीं आजमाइश के तौर पर तुम्हारे पास आती है।
- किस्मत वही कुछ छीनती है जो हमें देती है।
- हमारी किस्मत का फैसला हमारी जबान की नोंक पर ही होता है।
- किस्मत हमारी मुआमलात को हमारी आरजुओं, तमन्नाओं से बेहतर तौर पर चलाती है।

पाँच अँधेरों के पाँच चराग

- दुनिया की मुहब्बत अँधेरा है–
  इसका चराग परहेजगारी है।
- गुनाह अँधेरा है–
  इसका चराग तौबा है।
- कब्र अँधेरा है–
  इसका चराग कलमा तैयबा है।
- आखिरत अँधेरा है–
  इसका चराग नेक अमाल हैं।
- पुलसिरात अँधेरा है–
  इसका चराग यकीन है।

———

नफरत

नफरत क्या है?

नफरत चार लफ्जों से मिलकर बना है। ये अल्फाज अपने अन्दर क्या मायने रखता है?

न—से नर्क

फ—से फासले

र—से रोगी

त—से तबाही

यानी ये अल्फाज जब किसी के अन्दर जन्म लेते हैं तो नर्क बना देते हैं। फिर नफरत करने वालों से फासले कायम हो जाते हैं और ये फासले रोग बन जाते हैं जो तबाही की तरफ ले जाते हैं। अपनी जिन्दगी को खुशियों का खजाना बनाने के लिए इससे दूर रहना ही बेहतर है।

क्या पाया...और क्या कुछ खो डाला

फिल्म आई	–	और इल्म गया
फैशन आई	–	और हया गई
सिनेमाहॉल आया	–	और मदरसा व स्कूल गया
दौलत आई	–	और मुहब्बत गई
रेडियो आया	–	हिदायत गई
रिवाज आया	–	सुन्नत गई
हवस आई	–	सकून गया
बैंक आया	–	बरकत गई
टीवी आया	–	नींद गई
गाना आया	–	तिलावत गई
डिस्को आया	–	इज्जत गई
लालच आया	–	खुद्दारी गई
रूखापन आया	–	नर्मीपन गया
हिंसा आई	–	इंसानियत गई

खा जाती है

- रिश्वत इन्सान को खा जाती है।
- तौबा गुनाह को खा जाती है।
- गीबत आमाल को खा जाती है।
- नेकी बदी को खा जाती है।
- फिक्र उम्र को खा जाती है।
- क्रोध अक्ल को खा जाता है।
- सदका बला को खा जाती है।
- इंसाफ जुल्म को खा जाता है।
- घमंड इल्म को खा जाता है।
- जवानी में बहका हुआ कदम बुढ़ापे की खुशी को खा जाता है।
- झूठ एक ऐसा रिश्ता है जो हर रिश्ते को खा जाता है।

आँखें–अभिशाप या वरदान

आँखें खुदा की दी हुई अनमोल नेमत हैं कि अगर इन्सान के पास सब कुछ है और आँखें न हों तो जिन्दगी अँधेरे में सिमटी रह जाती है और वह कुदरत की सुन्दरता का अनुभव नहीं कर पाता है। उसे प्यार-मुहब्बत का क्या पता? आँखों की बदौलत ही इन्सान कुदरत की कायनात का लुत्फ उठा सकता है। कहा जाता है कि दुनिया की हर मखलूक और कुदरत की हर कायनात में खूबियों के साथ-साथ खामियाँ भी पाई जाती हैं। ठीक यही बात आँखों में भी पाई जाती है। कभी-कभी तो यह किसी अजाब से कम मालूम नहीं पड़ती।

आँखें ही वह शय हैं जिसे एक बार देख लेती हैं उसे उम्र भर नहीं भूलतीं। आँखें वह जज्बा है जिससे हम बड़े-बड़े काम कर जाते हैं। और तो और ये आँखें जादू हैं कि अनजान चेहरे को दिल में बसा लेती हैं और इन आँखों में ऐसा रंग चढ़ता है कि हमारा दिल हर वक्त बस उसी के बारे में सोचता है। और वह एक पल के लिए अगर इनसे जुदा हो जाए तो यह आँखें आँसू का दरिया बहा देती हैं और उसी के दीदार के वास्ते बस उसी का ख्वाब देखती हैं। आँखें उसे कभी भुला नहीं पातीं और जब वह चेहरा दोबारा दिखाई देता है तो आँखें करार पा लेती हैं और हमारी आँखों पर पता नहीं कैसा जादू छा जाता है और अपने दिल की बात आँखों के जरिए दूसरे दिल तक पहुँचा देती हैं।

मुकद्दर और दुआ

मुकद्दर वो होता है जो हमारे लिए खुदा की तरफ से हमारे नसीब में लिख दिया गया है। अच्छा मुकद्दर हमारी खुशबख्ती की अलामत है और बुरा मुकद्दर बदबख्ती की। जब हमारे साथ कुछ बुरा होता है तो हम उसे अपना मुकद्दर समझते हुए बर्दाश्त कर लेते हैं क्योंकि हमारे ख्याल में आज तक ऐसा कोई हथियार नहीं बना जिससे मुकद्दर का मुकाबला किया जा सके लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं है। एक हथियार ऐसा भी है जो हमारे मुकद्दर से टकराता है वो है 'दुआ'। हमारे लिए की गई दुआएँ ही हमारे बुरे मुकद्दर से टकराती हैं और दुआओं का पलड़ा भारी होता है। इसीलिए तो कहते हैं कि दुआएँ इन्सान के मुकद्दर को बदल देती हैं।

सौदा

मैं सोचता हूँ—मेरा वह कितना हमदर्द है, जब भी मैं कोई गलत काम करने लगता हूँ तो वह मेरी इस्लाह कर देता है...फलाँ काम करो फलाँ नहीं करो। मैं समझता हूँ उस मोहसिन जैसा कोई हमदर्द नहीं। हर कदम पर मेरी मदद करता है। मैंने कभी उसको देखा नहीं। वह कितना अच्छा है। वह दुनिया के किसी कोने में नहीं रहता बल्कि हमेशा मेरे पास रहता है। वह है मेरा दोस्त, मेरा जमीर जो मेरे वजूद की नस-नस में बसा हुआ है। अगर किसी के पास है तो उससे दोस्ती कर लो, बहुत फायदे का सौदा है। कभी पछताना नहीं पड़ेगा।

———

Lover Means Problem

To find a lover you always need time and money.

Therefore

$$\boxed{\text{Lover} = \text{Time} \times \text{Money}} \qquad \text{equation (1)}$$

Time is Money so

$$\boxed{\text{Time} = \text{Money}} \qquad \text{equation (2)}$$

Therefore from equation (1) and (2)

$$\text{lover} = \text{Money} \times \text{Money}$$

$$\boxed{\text{lover} = (\text{Money})^2} \qquad \text{equation (3)}$$

We know money is root of all problem

So,

$$\boxed{\text{Money} = \sqrt{\text{Problem}}} \qquad \text{equation (4)}$$

Now from the equation (3) and (4)

$$\text{Lover} = \left(\sqrt{\text{Problem}}\right)^2$$

$$= \text{Problem}$$

$$\boxed{\text{Lover} = \text{Problem}}$$

Proved

Scanned by CamScanner

आँसू

- आँसू खून का वह कतरा है जो गम के कारण पानी बन जाता है।
- दिलों में दुख और आँखों में आँसू लाने का कोई मौसम नहीं होता है क्योंकि जो काँटे बदएहतियाती से अपने ही हाथों बोए जाते हैं उसका दर्द कम नहीं होता है। उस पर शर्मसारी भी कमअक्ल के लिए नहीं होती और उनसे फख़र भी नामुमकिन होता है।
- ऐसे आँसू को रोक लो जो किसी की खुशी में रुकावट बन जाए।
- आँसुओं को बह जाने दो क्योंकि ये गमों को मायूसी में बदलने से रोकते हैं।
- आँसू तो सिर्फ मुहब्बत की सच्चाई का एहसास दिलाते हैं क्योंकि जज्बात ही रिश्ते आँसुओं के बगैर अधूरे रहते हैं। आँसुओं से दर्द का और दर्द से दिल का पता चलता है। और जिसने यह सच्चाई नहीं जी उसने जिन्दगी नहीं जी।
- आँसू वह हथियार है जो दोस्तों को जख्मी और दुश्मनों को खुश कर देता है।
- आँसुओं से दिल के दाग धुलने लगें तो फिर कमी किस चीज की है।
- आँसू बहाओ और खूब बहाओ मगर यह सोचकर नहीं कि हमारी ख्वाहिशात पूरी नहीं हुई बल्कि यह सोचकर कि हम इतने गुनाहगार हैं कि हमारी दुआ खुदा तक नहीं पहुँचती है।
- आँसू बहाकर खुशियों को और गम को मुस्कुराकर खुशामदीद कहना चाहिए।
- दुखी इन्सान के एक आँसू को पोंछना हजारों खून के आँसू बहाने से बेहतर है।
- जब सारी दुनिया साथ छोड़ देती है तो अपने आँसू ही हैं जो साथ देते हैं दुख कम करते हैं और दिल का बोझ हलका करते हैं।

- रौशनाई जल्दी सूख जाती है लेकिन आँसू नहीं।
- हमारी आँखें हमारे दिल से वातें करती हैं और जब दिल दर्द के बोझ को सह नहीं पाता है तो वह उस बोझ को आँखों के जरिए आँसू बनाकर हमारी आँखों से बहा देता है और हमारे दिल का बोझ हल्का हो जाता है।
- आँसू यानी आँख का पानी और नदी के पानी में सिर्फ जज्बात का फर्क है।
- आँसू शायद बहुत सस्ते हैं सो तोहफे में मिल जाते हैं।
- पाँव गीला किए बगैर समुद्र तो पार किया जा सकता है लेकिन आँसू बहाए बगैर जिन्दगी नहीं गुजर सकती।
- बददुआ कभी जबान से नहीं दी जाती, वो आँसू जो पलकों में अटका रह जाए वो खुद एक बददुआ होती है और दुखा हुआ दिल खुद एक बददुआ की गुजरगाह बन जाता है।
- आँसू कभी आप ही आप नहीं बहते, दिल पर चोट लगती है तो आह होंठों तक आ ही जाती है।
- रात की तन्हाई में इन्सान की आँखों से टपकने वाले आँसू जमाने बदल देते हैं और तूफान का रुख मोड़ देते हैं।
- अगर दुखों का दरिया पार करना चाहते हो तो आँसुओं को पीना सीख लो।
- आँसू कमाल की चीज होती है। देखने में बहुत शफ्फाक नजर आती है हालाँकि पता नहीं होता कि यह कितना झूठ और पछतावा अपने साथ बहाकर ले जा रही होती है।
- उन्हीं लफ्जों के आँसू बनते हैं जो जबान से अदा नहीं होते हैं।
- आज से ही कल की पैदाइश होती है। खिजा के गोद से ही बहार पैदा होती है। सूखे पत्ते धरती की गोद में समा कर हरियाली और फूलों को रूप देते हैं और आँसुओं से ही मुस्कुराहट जन्म लेती है।

मुहब्बत...क्या है? मेरी नजर में

- मुहब्बत दुनिया का सबसे खूबसूरत रिश्ता होने के बावजूद भी एक आधा-अधूरा रिश्ता ही होता है। यह बन्धन, यह नाना एक बेनाम सा नाता है। हर आशिक अपनी महबूबा से चन्द लोगों की भीड़ में बातें करते हुए कतराता है। मसलहत के परदे के पीछे छुपा। यह मसलहत क्या है? यही मुहब्बत का आधा-अधूरापन है। कोई रिश्ता बेनाम नहीं होना चाहिए। रिश्तों के लिए नाम की बैसाखी होना बेहद जरूरी है वर्ना यह लूले-लँगड़े ही होते हैं।
- मुहब्बत वह नहीं होती जो माफी और पशेमानी की तलबगार होती है। मुहब्बत तो वह होती है जो बिना कुछ बोले, बिना कुछ कहे एक-दूसरे के दिल की बात जान ली जाए। मुहब्बत में ये एहसास ही काफी होता है कि आपसे गलती हुई और बाकी सब बातें बेकार हैं।
- फूल की खुशबू का पता तो सूँघने पर ही चलता है और मुहब्बत भी एक फूल है जिसकी खुशबू इजहार चाहती है पर अपने रवैयों से।
- न तो मुहब्बत कभी नफरत में बदल सकती है और न ही नफरत कभी मुहब्बत में।
- धोखे, धक्के और ताने खाने के लिए हर आशिक को तैयार रहना चाहिए।
- झूठ, मुहब्बत और रकाबत कभी भी छुपाए नहीं छुपती।
- मुहब्बत हमेशा इस मान के साथ रूठती है कि उसे मना लिया जाएगा।
- मुहब्बत किसी तबके की जागीर नहीं, मुहब्बत करने के लिए एक सच्चा और एक खड़ा दिल होना चाहिए जो किसी के पास भी हो सकता है।

- मान टूट जाए तो क्या मुहब्बत और क्या नफरत! बस समझौता रह जाता है।
- मुहब्बत में बदगुमानी अच्छी नहीं होती है।
- मुहब्बत सोच-समझकर की जाए तो अय्यारी बन जाती है।
- जब दिलों में रंजिश भरी हो, रिश्ते में दरार पड़ चुकी हो, मुहब्बत मिट चुकी हो तो हर नामुमकिन चीज मुमकिन हो जाती है।
- वैसी मुहब्बत जहाँ सच्चे जज्बे, एतबार व एतमाद हो वहाँ बदगुमानियाँ पानी के बुलबुले से ज्यादा हैसियत नहीं रखतीं।
- तुम्हारे बगैर तो मैं जीने की सोच भी नहीं सकता और तुम्हारे बिना मौत भी मुझे गवारा नहीं।
- पसन्द और मुहब्बत को लोग एक ही चीज समझ बैठते हैं जबकि पसन्द और मुहब्बत एक ही तरह की दो अलग-अलग चीजें होती हैं। पसन्द बदल जाया करती है जबकि मुहब्बत नहीं बदलती।
- कुछ लोग सारी उम्र मुहब्बत करते रहते हैं मगर कभी लफ्जों से इजहार नहीं करते।
- उधार और कर्ज मुहब्बत की कैंची होती है जो मुहब्बत के टुकड़े-टुकड़े कर देती है।
- मत चाहो किसी को इतना कि उसकी चाहत तुम्हारी मजबूरी बन जाए बल्कि इतना चाहो कि तुम्हारी चाहत उसकी मजबूरी बन जाए।
- अपनी हदों क़ो हम जरूर कायम कर सकते हैं लेकिन मुहब्बत और जज्बों को मिटाना हमारे बस में नहीं होता।
- मुहब्बत का खेल चाहे हमारे दिलों की कितनी ही अटूट सच्चाई पर बनी हो, हम अपने जज्बों को कितना ही पाकीजा क्यों न समझें लेकिन यह दो अजनबियों के बीच हो जाने वाली मुहब्बत को हर तीसरा फर्द हमारी जवानी की नादानी या संगीन गलती

समझकर बिरादरी के जज्बातों का चटखारा बनाते हुए हमारा किरदार खराब करता रहेगा।

- बदअखलाकी दिलों से मुहब्बत कम कर देती है।
- मुहब्वत की कोई जबान नहीं होती, इसका इजहार तो रवैय्यों से होता है।
- अना मुहब्बत को कमजोर कर देती है।
- प्यार जिन्दगी की तरह होता है जिसका हर मोड़ आसान नहीं होता, हर रास्ते पर खुशियाँ नहीं मिलतीं, पर जब हम जिन्दगी का साथ नहीं छोड़ते तो हम प्यार करना क्यों छोड़ें।
- कभी-कभी दिल जोड़ने के लिए दिल को तोड़ना पड़ता है और दिल तोड़कर जोड़ने वाले को पता नहीं क्या कहते हैं।
- मुहब्बत इजहार किया जाने वाला नहीं बल्कि महसूस किया जाने वाला जज्बा है।
- ऐसा क्यों होता है कि हम जिससे चाहें मुहब्बत कर सकते हैं मगर जिसकी चाहें उसकी मुहब्बत हासिल नहीं कर सकते?
- दिल की गहराई से उसे चाहो जो तुम्हें भी शिद्दत से चाहती हो।
- मुहब्बत हुस्न, जवानी, दौलत से पैदा नहीं होती बल्कि मुहब्बत तो बस हो जाती है।
- प्यार को पा लेना भी एक खुमार है और उसके न पाने का भी जो दुख है उसका भी एक मजा है।
- मुहब्बत का मातम और खुशियाँ दोनों ही आँसुओं से ही बयाँ की जाती हैं।
- दुनिया की मुहब्बत में गिरफ्तार इन्सान को दुख भी बहुत होता है।
- मुहब्बत एक बार होती है, एक शख्स से होती है। यह कोई लिबास नहीं जो बार-बार बदला जा सके।
- मुहब्बत जितनी भी शदीद हो दिल में रखने से हब्सजदा हो जाती है।

- जिन्दगी एक फूल है और मुहब्बत उसका शहद।
- किसी को पा लेना उतना अहम नहीं है जितना किसी के दिल में जगह बना लेना होता है।
- जिन्दगी के गुलशन में सिर्फ मुहब्बत ही एक फूल है जो बहार का मोहताज नहीं।
- जहाँ प्यार हो वहाँ क्या झगड़ना, जिस बिन रह न सको भला उससे नाराज होकर क्या करना।
- मुहब्बत जुनून, शिद्दत और दीवानगी को नहीं कहते। असल मुहब्बत तो एतबार का रिश्ता है।
- दुनिया में ऐसा कोई पेड़ नहीं जिसको हवा न लगी हो और ऐसा कोई दिल नहीं जिसने कोई चोट न खाई हो।
- जिनकी तस्वीर दिल व निगाह में होती है उन्हें हम कभी-कभी नहीं बल्कि हर वक्त देखते रहते हैं।
- मुहब्बत किसी प्लानिंग या किसी मंसूबाबंदी से नहीं की जाती यह तो बस हो जाती है।
- मुहब्बत जिस्मों के मिलाप का नाम नहीं बल्कि यह तो रूह से रूह के मिलन का नाम है।
- मुहब्बत में अना नहीं होती और अना हो तो मुहब्बत नहीं होती।
- तुमको जब किसी से मुहब्बत हो जाए तो उसे आजाद कर दो। अगर वह लौट आए तो उसकी पूजा करो और वापस नहीं आए तो समझो वो तुम्हारे नसीब में नहीं था।
- जिस इश्क का तआल्लुक हुस्न से हो वह देरपा नहीं होता।
- पता नहीं मुहब्बत करने वालों के दिल खुदा किस तरह बनाता है, कभी यह इजहार नहीं करते और हार जाते हैं फिर भी खुश रहते हैं। कभी ये खामोश और एकतरफा मुहब्बत इन्सान के दिल को दीमक की तरह चाट जाती है, फिर भी लोग जिन्दा रहते हैं कितनी अजीब बात है।

- अना अच्छी चीज है मगर जब यह मुहब्बत से टकरा जाती है तो मुहब्बत को खाली कर देती है।
- मुहब्बत कभी नहीं मरती, इन्सान मरते हैं। मुहब्बत तो खुशबू है बिखर जाती है, एहसास है दिल में उतर जाती है, जज्बा है रूह में समा जाती है।
- हर दौर में हीर-राँझा, लैला-मजनूँ पैदा होते रहते हैं। मुहब्बत कभी पुरानी नहीं होती, बस किरदार बदलते रहते हैं मगर मुहब्बत का एहसास एक-सा रहता है।
- आँखें दिल की जबान होती हैं और कलम हाथ की।
- आँसू तो सिर्फ मुहब्बत की सच्चाई का एहसास दिलाते हैं क्योंकि जज्बात हो या रिश्ते आँसुओं के बगैर अधूरे रहते हैं। आँसुओं से दर्द का और दर्द से दिल का पता चलता है और जिसने यह सच्चाई नहीं जी उसने जिन्दगी नहीं जी।
- जिन्दगी के रंगमहल में अगर मुहब्बत का रंग न हो तो वह वीरान पड़ा रहता है।
- मुहब्बत के मोम से बना घरौंदा आँसुओं के सूरज से पिघल जाता है।
- हाँ...मुहब्बत में ऐसा ही होता है कि सिर्फ और सिर्फ एक शख्स के चले जाने से शहर के शहर वीरान हो जाते हैं और किसी एक को पा लेने से दोनों जहाँ मिल जाते हैं।
- कितनी अजीब ट्रेजडी है कि इन्सान को मुहब्बत का एहसास तब होता है जब महबूब पास नहीं होता और दिल अपने सारे जज्बे उस पर निसार करने के लिए तड़पता रहता है।
- मुहब्बत रूह का वह गुलाब है जो गुनाह की धूप से मुरझा जाता है।
- मुहब्बत इस कायनात की सबसे बड़ी सच्चाई है।
- मुहब्बत का तआल्लुक अक्ल के बजाय जज्बात से ज्यादा होता है।

- मुहब्बत और जज्बात तो हर इन्सान के दिल में होता है। जज्बे और मुहब्बत से खाली कौन होता है। जज्बे और एहसासात न हो तो दिल खाली मकान होता है।
- वक्ती खुशी, मुस्तकिल जुदाई के जख्म कभी नहीं भरते। आज मिलने वाला शख्स कल चला जाएगा और हम फिर अपनी दुनिया में लौट आएँगे एक नये जख्म के साथ जो कभी नहीं भर पाता है। यही है मुहब्बत की दास्ताँ।
- मुहब्बत खुशबू की तरह होती है जिसे कभी कैद नहीं किया जा सकता।
- यह मुहब्बत भी अजीब चीज है। जिन लोगों से हम मुहब्बत करते हैं चाहकर भी उन लोगों से हम नफरत नहीं कर पाते हैं। हम लाख उनसे नाराज होकर अपनी मुहब्बत को नफरत का लबादा उढ़ाएँ लेकिन इस नफरत में भी कहीं-न-कहीं हमारी मुहब्बत ही छुपी रहती है।
- मुहब्बत महज यकीन का ही नाम है, यह भी न हो तो इन्सान मुहब्बत कर ही नहीं सकता।
- मुहब्बत को लफ्जों में ढाला ही नहीं जा सकता, उसे तो बस महसूस ही किया जा सकता है।
- मुहब्बत जिन्हें याद करती है उन्हें सदा सफर में दौड़ाए फिरती है। मुहब्बत सिर्फ जोग है।
- जहाँ इज्जत नहीं वहाँ मुहब्बत नहीं।
- हम किसी को अपनी मर्जी से चाह तो सकते हैं लेकिन किसी की आँखों में आँखें डालकर यह नहीं कह सकते कि तुम भी मुझसे मुहब्बत करो।
- मुहब्बत कितनी आँखों के आँसू पीती है फिर भी यह खारी, बदजायका नहीं होती। लोग इसे अमृत समझकर पीते हैं।
- अगर किसी से मुहब्बत करो तो सिला न माँगो क्योंकि तुमने

मुहब्बत की है तिजारत नहीं।

- अजनबियत की दीवारें कभी तो उम्र भर नहीं गिरतीं और कभी एक ही लम्हे में मुहब्बत और अपनाइयत दिलों में घर कर जाती है।
- जो लोग चुपचाप सबको बर्दाश्त कर लेते हैं उनके बारे में तय है कि उनका दिल जख्मी है।
- मुहब्बत में बेएतबारी की कोई गुंजाइश नहीं होती।
- किसी से मत पूछो कि वो तुम्हें कितना चाहता है बल्कि तुम खुद सोचो कि तुम किसी को कितना चाहते हो।
- आदमी मुहब्बत करना छोड़ सकता है लेकिन इज्जत से दामन नहीं छुड़ा सकता।
- शादी प्लास्टिक का एक फूल है जिसे मुर्झाने का डर नहीं, लेकिन 'प्यार' सुवासित जीवित फूल है जिसे हर वक्त, हर पल मुर्झाने का डर रहता है या हर पल मुर्झाने का जोखिम उठाना पड़ता है।
- सगे रिश्ते से बढ़कर प्यार व खलूस, इज्जत व एहतराम का रिश्ता होता है।
- खाली पेट तो मुहब्बत भी अच्छी नहीं लगती।
- प्यार-मुहब्बत अपनी जगह है मगर इज्जत आईने की तरह नाजुक होती है।
- किसी से मुहब्बत हो जाना अजब नहीं मगर अपनी मुहब्बत के नशे में अक्ल और समझ को खैरबाद कह देना, अखलाकी कानून और धर्म व मजहब की बनाई हदों को पार कर लेना कहाँ की अक्लमन्दी है?
- मैं मुहब्बत में सिर्फ देने का कायल हूँ लेने का नहीं, माँगने का नहीं। यह कारोबार नहीं जिसमें कुछ दो और कुछ लो का उसूल चले। इसमें तो बेगरज होकर सिर्फ दिया ही जाता है, तलब नहीं किया जाता।
- कुछ लोग मुहब्बत में सब कुछ भुला देते हैं और कुछ लोग सब

कुछ भुलाकर मुहब्बत करते हैं। मेरा मानना है कि जहाँ मुहब्बत हो वहाँ कुछ मायने नहीं रखता। हाँ रखता है तो सिर्फ वक्त। सिर्फ वक्त ही सच्ची मुहब्बत की कसौटी है। अगर मुहब्बत सच्ची हो तो वक्त के साथ-साथ तड़प बढ़ती जाती है और अगर मुहब्बत झूठी हो या जिनका यह कहना है कि वे मुहब्बत करते हैं और भूल जाते हैं, असल में वे मुहब्बत करते ही नहीं।

- किसी से मुहब्बत करने और किसी से मुहब्बत होने में दिन और रात जैसा फर्क होता है। बिल्कुल ऐसे ही किसी को पसन्द करने और किसी से मुहब्बत करने में होता है। हम मुहब्बत को अपनी पसन्द में ढाल तो सकते हैं लेकिन पसन्द को मुहब्बत में नहीं बदल सकते क्योंकि पसन्द तो कभी भी बदल सकती है लेकिन मुहब्बत कभी नहीं बदल सकती।
- जो लोग दिल में जगह बना लेते हैं वे हमारे लिए गैर नहीं रहते बल्कि वे तो सबसे ज्यादा अपने लगते हैं।
- हर इन्सान की जिन्दगी में कभी-न-कभी कम-से-कम एक बार जरूर दिल और जहन के रास्ते जुदा हो जाते हैं।
- जरूरी नहीं कि दिल को पसन्द आने वाली हर चीज आपको मिल ही जाए, इसलिए इन्सान को अपने जज्बात पर पूरा कन्ट्रोल रखना चाहिए।
- मुहब्बत इबादत है अगर वह मुहब्बत है। इसमें सच्चाई हो तो वह रूह को आसमान की बुलन्दियों तक ले जाती है और अगर इसमें झूठ का हल्का-सा भी हिस्सा हो तो वह जमीन पर मौजूद कीचड़ से भी ज्यादा गन्दी होती है। मुहब्बत और इबादत में एक बारीक-सी लकीर का फर्क है।
- मुहब्बत एक ऐसा दरिया है कि अगर बारिश रुक भी जाए तो पानी कम नहीं होता।
- मुहब्बत इस तरह नहीं होती—गिड़गिड़ा कर, भीख माँगकर।

मुहब्बत माँगने में मुहब्बत की तौहीन होती है। यह कनपटी पर पिस्तौल रखकर किसी से कागज साइन कराने जैसी नहीं होती। यह तो वह यकीन और मान होती है जो बिना बोले, बिना पूछे रखी जाती है। एक ऐसा भ्रम जिसमें गिड़गिड़ाने का कोई खाना नहीं होता।

- दिल कोई सराय नहीं होता कि कोई मुसाफिर आया और ठहर गया। दिल तो एक घर होता है, एक आशियाना, मकीं बदलने का तो सवाल ही नहीं उठता।
- मुहब्बत का जवाब मुहब्बत नहीं इज्जत होती है, चाहे वो मुहब्बत देकर की जाए या दिल में रखकर की जाए।
- हम मशरिकी लोग मुहब्बत में मिलकियत के कायल होते हैं।
- मुहब्बत सनोबर की शाखों की तरह दिल से शाख दर शाख फूटती है। एक शाख के टूट जाने से बाकी शाखें उदास जरूर हो जाती हैं मगर अपना वजूद नहीं खो देतीं बल्कि टूटी हुई शाख को पूरी ताकत और मुहब्बत से खींचती हैं और कुछ देर बाद एक नई कोंपल फूट निकलती है।
- मुहब्बत में जुदाई का होना जरूरी है तभी इन्सान को मालूम होता है कि वो अपने साथी के लिए कितनी अकीदत व मुहब्बत रखता है।
- मुहब्बत में कितने बेशुमार दुख हैं और खुशियाँ तो बहुत थोड़ी मिलती हैं। कोई इसमें अपनी जिन्दगी दे देता है तो कोई जिन्दगी भर का रोग पाल लेता है। कैसा घाटे का सौदा है ये मुहब्बत भी।
- मुहब्बत करने वाले बददुआ नहीं देते मगर मुहब्बत में हार जाने वाले लोग दुआ भी नहीं दे सकते।
- अपनी आरजुओं को दिल में ही मार डालो मगर दिल को इस गम में मरने न दो।
- जिन लोगों के दिलों में मुहब्बत की कोंपलें बगैर किसी सिले या

तमन्ना के फूटें वो बेहिस नहीं बेगरज होते हैं।

- जब मुहब्बत कुछ ज्यादा बढ़ जाती है तो तखल्लुस की शर्त खत्म हो जाती है।
- मुहब्बत में जलना हर किसी के बस की बात कहाँ होती है।
- मुहब्बत के गमों को सजाना हर किसी को नहीं आता।
- मुहब्बत तब तक जिन्दा रहेगी जब तक कि ये जहाँ आबाद है।
- मुहब्बत चेहरे के पीछे छुपे हुए चेहरे को भी दिखा देती है।
- यह जो मुहब्बत की इमारत होती है उसका बन्द ताला खोलने के लिए एतमाद की चाबी का होना बहुत जरूरी होता है। जो लोग अपनी मुहब्बत पर एतमाद नहीं करते, मुहब्बत उन्हें अपने घर में दाखिल होने की इजाजत भी नहीं देती।
- दिलों के राज सिर्फ वही लोग समझ सकते हैं जिनके अपने दिल राजों से भरे हों।
- मुस्कुराहट मुहब्बत की जुबाँ है।
- किसी को पा लेना उतना अहम नहीं होता जितना किसी के दिल में जगह बना लेना।
- दुनिया में अगर खुश रहना चाहते हो तो किसी को दिल की गहराई से मत चाहो।
- मुहब्बत इन्सान के अन्दर एक शरीफ जज्बे का नाम है जिसे निकाल दिया जाए तो इन्सान और हैवान में कोई फर्क नहीं रहता।
- मुहब्बत में यह मुसीबत है कि ये जिससे हो जाए उसे आसानी से आजाद नहीं किया जा सकता क्योंकि उसे आजाद करने से दिल को बड़ी तकलीफ होती है।
- हम अक्सर दिल के टूट जाने के खौफ़ से डरते हैं मगर वक्त पड़ने पर पता चलता है कि दिल से ज्यादा मजबूत इस दुनिया में कोई चीज नहीं होती।

- किसी को पा लेना मुहब्बत नहीं होती। किसी को दिल में बसा लेने का नाम मुहब्बत है।
- मुहब्बत का आईना तो आईना है जिसे लाखों करोड़ों में कोई एक या खास ही देख पाता है।
- सच्ची मुहब्बत को पाने के लिए हर उस राह से गुजरना पड़ता है जिसमें कदम-कदम पर खूबसूरत मौत ने अपना जाल बिछा रखा है।
- मुहब्बत का नाम हम बड़ी आसानी से ले लेते हैं मगर इसे समझना उतना ही मुश्किल है जितना कि खुदा को समझना।
- मुहब्बत में खुदकुशी करना मुहब्बत को बदनाम करना है।
- मुहब्बत के मौसम में भीगने के बाद इन्सान के मिजाज में या तो खिजा की पीलाहट छा जाती है या तल्खियों की स्याही मिजाज को वहशतजदा सी कर देती है।
- एक लम्हे की नफरत सालों की मुहब्बत भुला देती है।
- इन्सान अन्दर से कितना ही दुखी हो लेकिन बाहर से कभी उसे टूटा और बिखरा हुआ नजर नहीं आना चाहिए। तुम्हें मालूम है कच्चे मकान की दीवार जब गिर जाती है तो लोग रास्ता बना लेते हैं। मकान हो या दिल दोनों का एहतराम जरूरी है।
- हार जाने में कभी तसल्ली नहीं मिलती, लेकिन अगर हारना मुहब्बत की जीत के लिए हो तो यही अजर बन जाता है।
- दुनिया जीने जैसी चीज न भी हो तब भी हमें उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। इस आखिरी सिरे पर खुदा भी हो सकता है और मुहब्बत भी।
- मुहब्बत के लिए इजहार की नहीं बल्कि जज्बों की जरूरत होती है। इजहार से तो इश्क रुसवा हो जाता है।
- मुहब्बत पाना हर किसी के लिए मुमकिन नहीं लेकिन मुहब्बत फैलाना हर किसी के लिए मुमकिन है।

- कुछ चीजें, बातें और लम्हे महसूस किए जाते हैं। उनका एहसास बड़ा भरपूर और खुशी भरा होता है। उनका इजहार हम अल्फाजों में नहीं कर सकते। मुहब्बत भी कुछ इसी तरह का एहसास है।
- मुहब्बत दिल की गहराइयों से निकला हुआ लफ्ज है।
- मुहब्बत हमेशा कुर्बानियों से परवान चढ़ती है।
- मुहब्बत की कोई मंजिल नहीं, इसकी इब्तिदा और इन्तिहा एक है।
- मुहब्बत एक ऐसी झील है जिसके किनारे बैठकर तुम बिना बोर हुए जिन्दगी भर नजारा कर सकते हो।
- अगर रास्ते भी काँच के हों और मंजिल भी तो उन रास्तों पर सफर करना और कामयाबी हासिल करना कितना मुश्किल हो जाता है यह कोई नहीं जानता। मुहव्वत का सफर भी कुछ इसी तरह का सफर है।
- जिनसे मुहब्बत की जाए उनसे अपनी तकलीफ छुपाई जाती है। यह मुहब्बत करने का पहला उसूल है।
- तुम जो चाहते हो उसे पाने की ख्वाहिश कभी न करो क्योंकि जव वह तुम्हारे हाथ आएगी तो अपना रूप खो देगी, चाहे वो कोई चीज हो या इन्सान।
- मुहब्बत के खेल में अक्ल हमेशा हार जाती है।
- मुहब्बत की जाए या मुहब्बत हो जाए, यह कोई बड़ी बात नहीं। बड़ी बात तो यह है कि मुहब्बत निभाई जाए और निभाना बड़े दिल वालों का काम है।
- पता नहीं क्यों मुहब्बत के जख्मों को भरना वक्त के लिए आसान काम नहीं होता। जो दुनिया के हर गहरे से गहरे जख्म को भरने का काम आसानी से बखूबी अंजाम देती है मगर वक्त भी मुहब्बत के जख्म भरने में अपना सारा हुनर भूल जाता है।
- एहसास वह है जो दिल को छू ले और रगों में उतर जाए। पहचान

वह है जो मिलने पर ही नहीं सोचने में भी सकून दे। और मुहब्बत वो है जो सब कुछ भुला दे मगर एक लफ्ज रहने दे– 'तुम'।

- मुहब्बत एक ऐसी जंजीर है जिसमें इन्सान अगर कटकर टुकड़े-टुकड़े भी हो जाए तो भी आजाद नहीं हो सकता।
- मुहब्बत वो खेल है जिसमें अक्ल हार जाती है।
- कुछ लोगों को इन्सान हमेशा याद रखता है। कुछ को मुहब्बतों के हवाले से, कुछ को नसीहतों के हवाले से और कुछ को नफरतों के हवाले से।
- मुहब्बत के गम भला किस उम्र में आसानी से कटते हैं। ये तो जब भी पड़ते हैं खुद इन्सान को टुकड़ों में बाँट देते हैं।
- अपने लोगों को धोखा देना और उनकी मुहब्बतों का नाजायज फायदा उठाने वालों के हिस्से में हमेशा नुकसान ही लिखा होता है।
- मुहब्बत अगर बेवफा बन जाए तो आँसू मुकद्दर बन जाते हैं।
- दिल समुद्र की तरह होता है बजाहिर खामोश मगर गहराइयों में तूफान छुपे होते हैं।
- मुहब्बत न मिले तो इन्सान जी लेता है लेकिन जिसे वो मुहब्बत समझता है अगर वो शख्स आपका मान न रखे तो इन्सान ऐसे टूटता है कि फिर उसके टुकड़े तक नहीं मिलते।
- हर गुमशुदा चीज उसी जगह मिलती है जहाँ गुम हुई हो, सिवाय मुहब्बत के।
- जो रास्तों के इश्क में गिरफ्तार हो जाते हैं, मंजिलें उनसे दूर हो जाती हैं।
- मुहब्बत इन्सान को बहादुर बना देती है इसलिए मुहब्बत देते और लेते रहो ताकि आप भी बहादुर बन सको।
- बहुत ज्यादा तकल्लुफ मुहब्बत की कमी का सबब बन जाता है।

- मुहब्बत एक ऐसी शय है जिसे पाने के लिए इन्सान किसी भी हद तक जा सकता है, एक ऐसा फूल है जो हर किसी के दिल में पाया जाता है मगर ये बहुत कम लोगों के दिल में ही खिलता है, एक ऐसी किताब जिसे पढ़ना बहुत कम लोग ही जानते हैं और एक ऐसा इम्तहान जिसमें हौसलेमंद लोग ही अपनी मंजिल को पा सकते हैं।
- सच्ची मुहब्बत यानी वफा करने वाले कभी किसी की बेवफाई का गिला नहीं करते।
- इंसानियत का दूसरा नाम मुहब्बत है।
- दुनिया में अगर मुहब्बत करना चाहते हो तो सबसे ज्यादा मुहब्बत अपनी किताबों से करो क्योंकि किताबें उस वक्त हमारा साथ देती हैं जब गैर तो गैर अपने भी ठुकरा देते हैं।
- मुहब्बत जब दिल से दूर होने लगती है तो पीछे रह जाने वाले वजूद को कितना कमजोर कर देती है जबकि मुहब्बत पाने वाला महफूज होता है। किसी की बख्शी हुई चाहतों के बदले, किसी की दुआ माँगती, हाँफती-काँपती साँसों की वजह से मुहब्बत करने वाला तो खाली हाथ खाली आँखों से बस रास्तों पर बिखरी आहटों के नक्श ही चुनता रह जाता है। सफर की परेशानी का किसी को पता नहीं होता चाहे वजूद जल-जलकर राख ही क्यों न हो जाए।
- मुहब्बत कीमती भी है और सस्ती भी। अगर मिल जाए तो सस्ती और न मिले तो कीमती।
- हम मुहब्बत में साँस लेते हैं तो फिजा में खुशबू बिखर जाती है, धनक रंग बिखर जाते हैं...हम मुहब्बत से देखते हैं तो पीले पत्ते भी हरे हो जाते हैं और डालियों पर फूल झूमने लगते हैं...मुहब्बत वो ताकतवर एहसास है जो मौसम भी बदल देता है। मुहब्बत के अनजाने से एहसास और ख्याल की झुलसी हुई दिशाओं में हवा

बहने लगती है...ऐसे में हमें बेशुमार लोग बहुत-सी चीजें...और बहुत-सी जगहें अच्छी न होने के बावजूद अच्छी लगने लगती हैं। इस जानकारी का एहसास कि कौन सचमुच अच्छा है या बुरा, कभी हो जाता है...और कभी कुछ पता नहीं चलता। हर जमाने हर चेहरे से दिल का हाल पढ़ लेना बहुत मुश्किल है...मगर मुहब्बत की इस अनोखी पहेली को जिन्दगी का सफर...तमाम गुत्थियाँ खुद सुलझाता चला जाता है।

- मुहब्बत में धड़कने वाले दिल के साथ कायनात की धड़कनें भी साथ मिल जाती हैं।
- मुहब्बत और महबूब की कुरबत मौसम को गुशगवार बना देती है।
- मुहब्बत फैले तो सारी कायनात और सिमटे तो एक खून की बूँद।
- मुहब्बत करने वाले जुदाई के अलावा किसी कयामत के कायल नहीं होते।
- मुहब्बत आसमानों की बेपनाह ऊँचाई को एक लम्हे में तय कर सकती है।
- मुहब्बत जमीन पर पाँव रखे तो आसमानों पर आहट सुनाई देती है।
- मुहब्बत करने वाले किसी और ही मिट्टी के बने होते हैं। यह दुनिया में रहकर भी दुनिया से अलग होते हैं।
- मुहब्बत में दिल पर लगे घाव और रूह पर लगे जख्म कभी नहीं भरते। गुजरते वक्त के साथ-साथ उन टीसों में इजाफा ही हो जाता है।
- मुहब्बत में टूटकर चाहने वाले सिर्फ दर्द और गम समेटते हैं।
- मुहब्बंत का यह उसूल होता है जिसको चाहते हो उसके दुख-दर्द सब अपने अन्दर समा सको तो मुहब्बत करो वर्ना नहीं।
- मुहब्बत में इज्जत की शर्त पहले होती है और जहाँ इज्जत न हो

वहाँ से मुहब्बत भी रुखसत हो जाती है। क्या ऐसा कभी होता है जिनसे हम मुहब्बत करें उन्हें हम जलील भी करें और जहाँ जिल्लत सर उठाए खड़ी हो वहाँ मुहब्बत की परछाईं भी नहीं होती।

- मुहब्बत अगर खुदा से हो तो बन्दगी बन जाती है, औलाद से हो तो फर्ज बन जाती है, दोस्त से हो तो राहत बन जाती है, उस्ताद से हो तो रौशनी बन जाती है, वालिदैन से हो तो फरमाबरदारी बन जाती है, वतन से हो तो ईमान का हिस्सा बन जाती है और किसी गैर मरहम (इश्के-मिजाजी) से हो तो गुनाह व सजा बन जाती है।
- मुहब्बत एक ऐसा पाकीजा जज्बा है जो इन्सान के दिल में उम्र के किसी भी हिस्से में पैदा हो सकती है और इस जज्बे पर किसी का इख्तियार नहीं होता।
- मुहब्बत अपने शौदाई से जबरदस्त कुर्बानी माँगती है जो इनकार करने पर भी देनी पड़ती है।
- जो लोग टूटकर मुहब्बत करते हैं उनसे अपनी मुहब्बत की तौहीन कभी बर्दाश्त नहीं होती है। मुहब्बत और वफा जब पूरी तरह घायल हो जाती है तो क्या रंग इख्तियार करेगी और किस रुख पर जाएगी इसकी किसी को खबर नहीं होती।
- जो इन्सान अपनी वफा का जिक्र करता है वह असल में दूसरों की बेवफाई का जिक्र करता है।
- मुहब्बत की मुरव्वत में किया जाने वाला जब्त बहुत कड़ा होता है।
- मुहब्बत तो रौशनी है, ऐसी रौशनी जो जिन्दगी में रिमझिम सी कर दे, खुशी के रंग हों तो उसे चकाचौंध कर देती है और अगर गम के साथ हो तो उसे अपना गम प्यारा हो जाता है।
- मुहब्बत सच्ची होती है या झूठी इसका तआल्लुक मुकद्दर से

होता है और वह लोग जो आपके दिल व दिमाग पर छा जाते हैं, मुकद्दर के सिकन्दर होते हैं।

- यह मुहब्बत आँसुओं की कोख से पैदा होती है और उम्र भर के लिए आँसुओं से ही ब्याही जाती है।
- मुहब्बत में ऐसा ही होता है—दिल उसका बन जाता है जिसका नाम हमारी हथेली पर नहीं लिखा होता।
- यह मुहब्बत बहुत जालिम होती है, जब किसी दिल में बस जाती है तो उसे रेजा-रेजा कर देती है।
- मुहब्बत इन्सान को इन्तिहाई बुलन्दी पर भी ले जाती है और इन्तिहाई गहराई में भी ले जाती है।
- प्यार इन्सान को जीना भी सिखाता है और जीकर मरने का सबक भी देता है।
- प्यार जीत भी देता है और हार कबूल करने का सलीका भी सिखाता है।
- जिससे मुहब्बत हो उससे मुआफी का तकाजा करना या उसकी ख्वाहिश रखना कम-से-कम मैं तो जायज नहीं समझता।
- मुहब्बत में इन्सान को कुछ मिले या न मिले सैकड़ों गम व आँसू जरूर मिल जाते हैं। यह दीवानी मुहब्बत इन्सान को सौगातें जरूर दिया करती है और उसके बाद इन्सान कहीं का भी नहीं रह जाता। आशिक को महबूब मिले या न मिले ये सौगातें जरूर मिल जाती हैं और उन्हीं के साथ आशिक की जिन्दगी भी बसर हो ही जाती है।
- लफ्ज खूबसूरत हों तो तहरीर में भी खूबसूरती आ जाती है मगर खुलूस और मुहब्बत से खाली हो तो तहरीर तमाम खूबसूरती के बावजूद दिल में बसेरा नहीं करती।
- मुहब्बत एक ऐसी अमरबेल है कि जिस दरख्त पर चढ़ जाती है वह पेड़ सूखकर एक दिन अपने आप ही गिर जाता है।

- मुहब्बत ख्याल के अलावा और है भी क्या? इन्सान आमतौर पर उस अक्स, तस्वीर या इमेज से मुहब्बत करता है जो उसका जहन बनाता है। मुहब्बत किया जाना आसान काम भी है और कद्रे-मुश्किल भी।
- कुछ लोगों की मुहब्बत हासिल करने के लिए दर्द का दीया रौशन करना पड़ता है। क्योंकि वो लोग आँसुओं के बगैर मुहब्बत का तसव्वुर ही नहीं कर पाते।
- समुद्र की हदें होती हैं लेकिन जज्बा-ए-इश्क की कोई हद नहीं होती है।
- मुहब्बत एक बच्चे की तरह होती है जो हर उस चीज की ख्वाहिश करती है जो उसके रास्ते में आ जाए।
- दीवार सिर्फ कमरे की नहीं होती बल्कि दिल की भी होती है जिसमें न जाने कितनी हसरतें, आरजुएँ, कई-कई ख्वाब और कई ख्याल दफन होकर रह जाते हैं।
- यह मुहब्बत तो दिल पर असर करने वाली नदी की तरह होती है जो खुद ही अपना रास्ता बना लेती है। यह किसको कहाँ ले जाएगी किसी को पता नहीं होता।
- जहाँ केयर हो वहाँ मुहब्बत होती है। जहाँ मुहब्बत हो वहाँ पर. किसी और चीज की जरूरत नहीं होती। अगर मुहब्बत और केयर में कुछ भी नहीं हो तो वहाँ जिन्दगी का वजूद बिल्कुल बेअमनी हो जाता है।
- मुहब्बत के बगैर इन्सान जी सकता है पर इस खूबसूरत अन्दाज में नहीं कि जैसे मुहब्बत में सरशार रहकर जीया जा सकता है।
- मुहब्बत बेइख्तियारी में हो जाने वाला एक अमल है जो एक खता कहला सकता है पर जुर्म या गुनाह नहीं।
- इन्सान की जिन्दगी में मुहब्बत बहुत जरूरी है, इसलिए कि मुहब्बत के बगैर इन्सान अधूरा है और कमजोर भी। यह इन्सान

की जिन्दगी ही नहीं बल्कि ताकत भी है। पर सिर्फ मुहब्बत जो लालच, गरज और हवस से बिल्कुल पाक और साफ हो।

- मुहब्बत करने वाले कभी किसी दूसरे का तमाशा नहीं बनाया करते।
- इन्सान कहता है (अगर दुख उठाए तो) कि मुहब्बत में बहुत आजमाइशें हैं जिनसे हर कोई नहीं गुजर सकता। लेकिन अगर उस इन्सान को मुहब्बत के शुरू में पता लग भी जाए कि रास्ता काँटेदार है तब भी वह जायका चखता है कि यह इन्सानी फितरत है। इन्सान हर लाहासिल चीज के पीछे भागता है चाहे उसे अपनाकर खुद छोड़ ही न दे।
- मुहब्बत वह बेइख्तियार अमल है जो अपने अंजाम से नावाकिफ होती है।
- जो मुहब्बत करते हैं वे उसूलों की परवाह नहीं करते कि मुहब्बत तमाम उसूलों से ऊपर होती है और मुहब्बत करने वाले अपने चाहने वालों के लिए अपने उसूल तोड़ देते हैं मगर उसूलों के लिए अपने चाहने वालों को नहीं छोड़ते।
- अपनी मुहब्बत को कैद करके खुशी हासिल नहीं होती। मुहब्बत की चहचहाहट में उसी वक्त चहकार सुनाई देती है जब वह अपनी मर्जी से आजाद फिजाओं में मुहब्बत के गीत गुनगुना रही हो। मुहब्बत उड़ते हुए, पहुँच से दूर महबूब से भी की जा सकती है। मुहब्बत करने के लिए मिलाप की शर्त नहीं होती।
- मुहब्बत में फुर्कत की घड़ियाँ बहुत मरगूब हैं, महबूब की फिराक में तड़पे बगैर मुहब्बत को नहीं पहचाना जा सकता।
- मुहब्बत की कीमत महबूब के सिर्फ चन्द गर्म-गर्म आँसू हैं, इन आँसुओं की गर्मी से बड़े-बड़े महल भी पिघल जाते हैं।
- मुहब्बत इंसानियत की तकमील है, जिस दिल में मुहब्बत का जज्बा नहीं वो दिल इंसानियत से खाली है।

- मुहब्बत को कुछ नफ्सपरस्त लोग महज एक खिलौना समझते हैं जबकि मुहब्बत के अजमत को बड़े-बड़े फलसफों ने माना है।
- खामोश मुहब्बत उस बहते हुए पुरसकून दरिया की तरह है जिसकी मौजों में कोई तलातम नहीं होती लेकिन मुहब्बत का इजहार उसकी मौजूदगी में तलातम पैदा कर देता है और लहरें बेकाबू हो जाती हैं।
- किसी को पाने की तमन्ना मत करो बल्कि खुद को इस काबिल बनाओ कि लोग तुम्हें पाने की तमन्ना करें।
- जो इन्सानों से मुहब्बत करता है वह कभी नहीं मरता बल्कि हमेशा जिन्दा रहता है, एक हसीन याद बनकर, एक खुशबू बनकर और बेचैन नींदों के दरमियान एक रौशन ख्वाब बनकर।
- जुदाई के रास्तों पर दर्द बसेरा कर लेता है मगर मुहब्बत उन्हें सताती है चाहे आपकी हो या किसी की।
- मुहब्बत हक नहीं होती बल्कि मुकद्दर होती है।
- मनपसन्द चीज को देखना, चाहना और पा लेना मुहब्बत नहीं. होती है। मुहब्बत के मायने तो बहुत बड़े होते हैं। जो चीज दिलों को जीत ले उसका दायरा इतना छोटा नहीं होता। मुहब्बत के साथ कुर्बानी और हमदर्दी जरूर जुड़ी होती है लेकिन इसमें खुदगर्जी का नामोनिशान भी नहीं होता।
- खूबसूरती से भी बड़ी शय है 'मुहब्बत' जिसने इन्सानों को कदम-कदम पर शिकस्त दी है।
- जिन्दगी में कभी किसी को इतना नहीं चाहना चाहिए कि वह तुम्हारे दिल की आखिरी तमन्ना बन जाए और उसके बगैर तुम्हारी जिन्दगी बोझ बन जाए।
- यह दुनिया बहुत जालिम है जो तकलीफों से भरी पड़ी है। अगर तुम यहाँ सकून से जिन्दगी गुजारना चाहते हो तो किसी को दिल की गहराई से मत चाहो वर्ना खुद टूटे हुए फूलों की पत्तियों की

तरह बिखर जाओगे और तुमको समेटने वाला कोई नहीं होगा।

- मुहब्बत में आशिक को महबूब के आगे सारी दुनिया छोटी लगती है, यहाँ तक कि वालिदैन और बहन-भाई की नसीहत भी सख्त जहर लगती है।
- मुहब्बत के नशे में चूर आशिक को भला यह बात कहाँ समझ में आती है कि जो शख्स हमारा है ही नहीं उसके लिए आँसू बहाना या उसकी यादों को सीने से सजाए रखना हिमाकत होती है।
- जब हँसी की सूरत में सदा होंठों पर सजी मुहब्बत, आँख का आँसू बन जाए तो दर्द इन्सान को न तो जीने देता है और न ही मरने।
- मुहब्बत कमान की तरह होती है जो ज्यादा तानने से टूट जाती है।
- मुहब्बत आँखों से नहीं दिल से देखती है। शायद इसीलिए मुहब्बत के देवता को अन्धा बताया गया है।
- मुहब्बत तो एक सैलाब की तरह आती है और उसे यह पता नहीं होता कि उसके रास्ते में आने वालों का क्या अंजाम हुआ। मुहब्बत तो सिर्फ खुद को मनवाती है और बेपरवाई से घमंडी सरों को अपने कदमों में झुका हुआ देखती है। शायद मुहब्बत बेदर्द होती है क्योंकि मुहब्बत को इस बात की परवा नहीं होती कि उसके पैरों तले रौंदे जाने वालों का क्या अंजाम हुआ? क्या वो ख्वाब जो मुहब्बत ने उनकी आँखों को बख्शे थे, पूरे हो गए? क्या वे लोग जो मुहब्बत की बड़ाई को कबूल कर लिया या मुहब्बत की खुशी भी उनका मुकद्दर बनी या नहीं? मुहब्बत अपने नशे में मस्त रहती है वह पीछे मुड़कर अपने छोड़े हुए निशान कभी नहीं देखती।
- मुहब्बत की गहराइयों को पाना मुश्किल ही नामुमकिन है। वह एक राज की तरह तुम्हारे आस-पास मौजूद रहती है मगर चाहती है कि तुम उसे ढूँढ़ते रहो। वह खुशबू की तरह तुम्हारे अन्दर

रहती है मगर चाहती है कि तुम उसे तलाश करते रहो। मुहब्बत बार-बार तुम्हारे सामने आती है और चाहती है कि तुम उसे पहचान लो, अगर तुम उसे पहचान नहीं पाते तो वह लौट जाती है और तुम्हें सारी जिन्दगी उसके बगैर गुजारनी पड़ती है।

- मुहब्बत बहुत खुदगर्ज होती है उसे यह होश नहीं होता कि उसके रास्ते में आने वालों का क्या अंजाम हुआ? वह ख्वाब देती है ताबीर नहीं, मंजिल दिखाती है रास्ते नहीं।
- मुहब्बत से ज्यादा बेतुकी कोई चीज नहीं होती, मुहब्बत इन्सान को बेकार कर देती है, नाकारा बना देती है। इन्सान अपना वकार अपनी शख्सियत सब भूल जाता है। मैं नहीं मानता कि मुहब्बत कभी किसी का कोई भला भी कर सकती है। मुहब्बत सिर्फ छीनना जानती है और सब कुछ छीन लेती है; उसे देना आता ही नहीं, वो तो सिर्फ छीनना जानती है।
- मुहब्बत वो तन्हा जज्बा है जिसे भगवान ने हर किसी के दिल में डाला है। माँ-बाप हो या दोस्त, मुहब्बत दुनिया में हर जगह है। जो एक-दूसरे की जिम्मेदारी को महसूस करते हों, एक-दूसरे को देखकर फख्र या खुशी महसूस करते हों या किसी के लिए दुआ माँगते हों, सबकी बुनियाद सिर्फ और सिर्फ मुहब्बत है।
- मुहब्बत की हद वहाँ से शुरू होती है जहाँ इख्तियार की हद खत्म हो जाती है।
- कौन कहता है मुहब्बत इन्सान को सब कुछ दे देती है, मुहब्बत तो इन्सान का सब कुछ छीन लेती है।
- कभी-कभी तकलीफ की ज्यादती मुहब्बत की कमी की वजह बन जाती है।
- मुहब्बत किसी फलसफे, किसी मजहब की मोहताज नहीं होती क्योंकि मुहब्बत तो खुद एक फलसफा और एक मजहब है।
- मुहब्बत एक ऐसा पाकीजा रिश्ता है जिसके बगैर इन्सान अधूरा है।

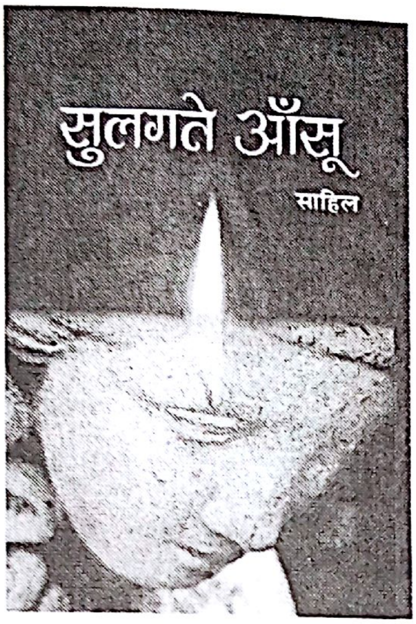
- मुहब्बत एक ऐसी दलदल का नाम है जिसमें इन्सान धँसता है तो फिर जिन्दगी भर धँसता ही चला जाता है।
- मुहब्बत एक ऐसा जज्बा है जो रूह को पाकीजा कर देती है।
- मुहब्बत खुदा की पहचान का जरिया है।
- मुहब्बत आजमाइशों का दूसरा नाम है।
- मुहब्बत में हमेशा खुद से ज्यादा महबूब की खुशी प्यारी होती है।
- मुहब्बत, जिन्दगी की तरह होती है जो हमेशा आसान नहीं होती और हमेशा खुशियाँ ही नहीं लाती लेकिन जब हम जीना नहीं छोड़ सकते तो फिर मुहब्बत करना क्यों छोड़ दें।
- सपना और मुहब्बत, ये दो ऐसी चीजें हैं जहाँ कुछ भी नामुमकिन नहीं होता।
- प्यार-मुहब्बत, एक ऐसा दिल है जो दो लोगों के सीने में धड़कता है।
- मुहब्बत के बारे में सोचना, बातें करना बहुत ही आसान है लेकिन जब हम मुहब्बत में मुब्तला होते हैं तो इसे निभाना बहुत ही मुश्किल होता है।
- True loves comes quickly, without banner, or flashing light. If you hear bells get your checked.
- True love is like ghosts which everybody talks about and few have seen.
- Love is the most beautiful things in the world which can not be seen or never touched. It must be felt with heart and it get only lucky man.
- Love is a joy which everyone wants to joy. Love is a pain which has an immoral gain and a thrust which remain in every heart.
- When poverty comes in at the door, love flier out of the door.

- Love is an ocean of emotion, entirely surrounded by expens.
- Keep love in your heart. A life without love is like a sunkess garden where the flower are dead.
- Love is the supreme power of the heart, mysterious, enthusiasm that inclose in itself all poetry, all heroism all religion.
- Love is composed of a single soul inhabitting two bodies.
- Love is a true rirtue that binds two heart together and give peace and harmoney.
- Who can gives law to lovers? Love is greater law to itself.
- I never knew how to worship untill but I knew how to love.
- I always believed my first love is my last love and my last love is my first love.
- Mutual love, the crown of all our bliss.
- In the arithmetic of love, one plus one is equals everything and two minus one equals nothing.
- Love means to commit oneself without guarantee, to give oneself completely in the hope that our love will produce love in the loved person. Love is an act of faith and whoever is of little faith is also of little love.
- The life and love, we creat is the life and love we live.
- Dont't let someone become everything because when they are gone you have nothing.
- Falling in love is awfully but falling out of love is simply awfull.
- Pleasure of love lasts but a moment, And pain of love pasts of life time.
- If is has to choosen between loving you and breathing. I

would use my last breath to say I love you.

- When you are in love you can't fall asleep because reality is better than your dreams.
- Love : we think about it, sing about it dream about it & loose sleep worrying about it. When we don't know we have it, we search for it when we discover it, we don't know what to do with it. When we have it we fear loosing it. It is constant source of pleasure and pain but we don't know which it will be from one moment to next. It is a short word casy to spell, difficult to define and impossible to live without...
- Love begins with smile and end with teardrop.
- Love is widly misunderstood although highly desirable malfunction of the heart which weakness the brain, causes eye to sparkle cheeks to glow, blood pressure to rise and the lips to pucker.
- Love is a connection of heart through an invisible midia which supports heart signal onpenly.
- Love is the medicine of any kind of pain but be sure there is no medicine in this world for the pain given by love.
- Don't find love, let love find you. That's why it called falling in love because you don't force yourself to fall, you just fall.
- My love is journy, starting at forever and ending at never.

❑❑❑



'सुलगते आँसू' एक ऐसी सिसकती हुई दर्द व आँसुओं में डूबी हुई ग़ज़ल की शक्ल में एक अधूरी मुहब्बत की सच्ची कहानी है, जो बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर देती है। यह ऐसी मुहब्बत की दास्ताँ है जिसने एक मुसलमान को मुसलमान से काफिर बना दिया।

'सुलगते आँसू' मुहब्बत की ऐसी दास्ताँ है जिसमें आशिक ने अपनी बेवफा महबूबा के लिए शाहजहाँ की तरह मुहब्बत की निशानी ताजमहल तो नहीं बना पाया लेकिन अपनी मुहब्बत को एक जुबाँ देकर एक किताब की शक्ल में सारी दुनिया के सामने लाकर अपनी मुहब्बत को अमर बनाने की कोशिश जरूर की है।

नोट : लेखक के बारे में विशेष जानकारी के लिए वेबसाइट www.arsahil.com देखें।



मैं अपने बारे में आप लोगों को क्या बताऊं कुछ समझ में नहीं आता लेकिन मुझे यकीन है इस किताब को पढ़ने के बाद आप खुद मुझे जान जायेंगे, समझ जायेंगे। मैं तो बस आप लोगों से इतना ही कहूंगा...

"मेरे बारे में नाम के अलावा और जान कर क्या करोगे दोस्त
मैं तो हर किसी के दर्द को अपना दर्द समझने वाला आम इंसान हूं
न सिख, न ईसाई, न हिन्दू, न मुसलमान, इन्सानियत का पुजारी हूं
इस्लाम मज़हब है मेरा पर मैं तो बस मुहब्बत का एक पैगाम हूं।

मैं तो मुसाफिर हूं यारों न मंजिल है न कोई ठिकाना
नीले-नीले अंबर तले सारा जहां है मेरा आशियाना
मिलता है जहां प्यार वहीं रुक जाते हैं पल दो पल के लिए
दो गज जमीन का टुकड़ा ही "साहिल" असली मकां है मेरा ।।

ए. आर. साहिल

ISBN 81-88388-70-X

हिन्दी साहित्य सदन

2, बी.डी. चैम्बर, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23553624, 23551344
e-maill : indiabooks@rediffmail.com